महापुराणों का परिचय

श्रीमद्भागवत पुराण

श्रीमद्भागवत सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पुराण हैं। इसमें १८ हजार श्लोक उपलब्ध हैं। श्रीमद्भागवत में १२ स्कन्ध एवं ३३५ अध्याय हैं। स्कन्ध एवं अध्यायों की संगति अन्य पुराणों में कथित श्रीमद्भागवत-विषयक विवरणों से बैठ जाती है, पर-श्लोक संख्या मेल नहीं खाती नारदीय-पुराण, कौशिक संहिता गौरी तंत्र, गरुड पुराण, स्कन्द पुराण, सात्वततंत्र आदि ग्रन्थों में बारह स्कन्ध, ३६५ अध्याय एवं १८ हजार श्लोकों का विवरण है 'पद्म पुराण में भागवत की ३३२ शाखाओं (अध्यायों) का उल्लेख है और श्रीमद्भागवत के प्राचीन टीकाकार चित्सुखाचार्य भी ३३२ अध्यायों की पुष्टि करते हैं और इसी कारण अन्य कतिपय आचार्यों ने तीन अध्यायों को प्रक्षिप्त माना है। श्रीमद्वल्लभाचार्य के अनुसार भी दशम स्कन्ध के ८८, ८९ और ९० अध्याय प्रक्षिप्त हैं और इसी कारण उन्होंने अपने 'तत्त्व दीप निबन्ध' के भागवतार्थ-प्रकरण में रूपक का विधान करते समय उपर्युक्त अध्यायों को हटा दिया है। ठीक इसके विपरीत जीव गोस्वामी का मत है। "जो इन अध्यायों को प्रक्षिप्त मानते हैं, उनके ऐसा मानने का कोई कारण नहीं है, क्योंकि सब देशों में वे प्रचलित हैं और 'वासना-भाष्य' 'सम्बन्धोक्ति' 'विद्वत्कामधेनु' 'शुकमनोहरा परमहंस प्रिया' आदि प्राचीन एवं आधुनिक टीकाओं में इनकी व्याख्या की गयी है।

श्रीमद्भागवत के १८ हजार श्लोकों के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार का मत वैभिन्न्य है। अधिकांश विद्वान् इस मत के पोषक हैं कि इस ग्रन्थ के एक-एक श्लोक एक-एक शब्द एवं अध्याय की पुष्पिका को मंत्र समझ कर पाठ किया जाता है। अतः मंत्र ग्रंथ मानकर 'उवाच' को एक श्लोक एवं अध्यायों की पुष्पिका को डेढ़ श्लोक मानने पर परिशेष ३३४८ श्लोकों की पूर्ति हो जाती है। डॉ० हरवंश लाल शर्मा ने अपने ग्रन्थ में श्री गंगासहाय जी जरठ का मत दिया है; जिन्होंने बड़े परिश्रम से श्रीमद्भागवत के अक्षर-अक्षर की तीन बार गणना कर उसमें सत्रह हजार नौ सौ साढ़े अट्ठानवे श्लोकों को पाया था।

श्रीमद्भागवत के प्रथम स्कन्ध का प्रारम्भ सूत-शौनक-संवाद के अन्तर्गत भगवत् कथा एवं भगवद्भक्ति से होता है। वैसे इस महापुराण के वक्ता शुकदेव हैं और श्रोता राजा परीक्षित और इन्हीं दोनों के संवाद के रूप में इसका प्रणयन हुआ है। इसमें भगवान् के २२ अवतारों की कथा तथा नारद जी के पूर्व जीवन का वर्णन है, जिसमें दिखाया गया है कि एकमात्र भक्ति से ही चित्त को शान्ति मिलती है। इसी स्कन्ध में अश्वत्थामा द्वारा द्रौपदी के पांच पुत्रों की हत्या, युद्धोपरान्त पाण्डवों द्वारा आत्मीय जनों का तर्पण, युधिष्ठिर का राज्यारोहण, अश्वत्थामा के छोड़े गये ब्रह्मास्त्र से चक्रसुदर्शन द्वारा परीक्षित की रक्षा, युधिष्ठिर का भीष्म पितामह से कर्त्तव्योपदेश श्रवण कर आत्मग्लानि को हटाना, भीष्म का देह-त्याग, हस्तिनापुर में परीक्षित का जन्म, अर्जुन का युधिष्ठिर को यादवों के संहार और श्रीकृष्ण के स्वधाम-गमन का समाचार सुनाना, परीक्षित को राज्य सौंप कर पाण्डवों का स्वर्गारोहण, शमीक ऋषि के गले में परीक्षित द्वारा मरा हुआ साँप लगाना एवं श्रंगी का परीक्षित को शाप देना। तक्षक नाग के काटने से परीक्षित की अपने पुत्र जनमेजय को राज्यभार सौंपकर मत्यु।

द्वितीय स्कन्ध - शुकदेव द्वारा परीक्षित को भगवद्ध्यान की विधि बताना तथा भगवान् के विराट् रूप का वर्णन, भगवन्माया से रचित सष्टि के विधान का क्रम-वर्णन, कच्छप, नसिंह एवं परशुरामवतार की कथा, चतुःश्लोकी भागवत का उपदेश, ब्रह्मा जी द्वारा सर्ग विसर्ग आदि से सम्पन्न भागवत की कथा नारद को सुनाना।

ततीय स्कन्ध - महाभारत युद्ध के पूर्व विदुर का घर त्याग कर तीर्थाटन के लिए प्रस्थान, यमुना-तट पर उद्धव से भेंट, कृष्ण के गूढ़ रहस्य को जानने के लिए विदुर का मैत्रेय से मिलना,

स ष्टिक्रम का वर्णन, विराट् शरीर की उत्पत्ति, निर्विकार ब्रह्म के स्वरूप का कथन, ब्रह्मा की उत्पत्ति, दशविध स ष्टि एवं मन्वन्तरादि के काल-परिमाण तथा स ष्टि का विस्तार-वर्णन। हिरण्यकशिपु एवं हिरण्याक्ष की कथा, कपिल एवं सांख्य शास्त्र का वर्णन, कपिल का अपनी माता देवहूति को भक्ति-योग, प्रकृति-पुरुष-विवेक, अष्टांग योग तथा महदादि तत्त्वों को समझाना।

चतुर्थ स्कन्ध - देवहूति की कथा, दक्ष प्रजापति और शंकर की कथा, वेन चरित, राजा प थु की कहानी रुद्र द्वारा भगवान् नारायण 'योगादेश' नामक स्त्रोत का उपदेश, जीव तथा ईश्वर के स्वरूप का निदर्शन तथा पुरंजनोपाख्यान, प्रचेताओं द्वारा प थ्वी के सार्वभौम राज्य की प्राप्ति तदनन्तर अपने पुत्र दक्ष को राज्य देकर परमपद की प्राप्ति।

पंचम स्कन्ध - विदुर का हस्तिनापुर के लिये प्रयाण, प्रियव्रत की कथा, ऋषभदेव का चरित, जड़भरत की कथा, विष्णु पदी (गंगा) का वर्णन, हयग्रीवावतार की कथा, भिन्न-भिन्न ग्रहों की स्थिति, प्लक्ष, शाल्मली आदि द्वीपों के प्रमाण एवं लक्षण तथा लोकालोक पर्वत का वर्णन, नीचे के सात लोकों का विवरण, अद्ठाईस नरकों एवं उनमें गिरने वालों की गति का वर्णन।

षष्ठ स्कन्ध - भगवद्भक्ति को नरकों से बचने का उपाय कहना, अजामिल की कथा, विष्णु दूतों द्वारा भागवत धर्म का निरूपण, स्वायम्भुव मन्वन्तर का वर्णन, प्रजा स ष्टि का वर्णन, दक्ष द्वारा नारद को शाप, ब हस्पति द्वारा इन्द्र का त्याग एवं देवताओं का विश्वरूप को पुरोहित बनाना, इन्द्र द्वारा विश्वरूप का वध एवं व त्रासुर का जन्म दधीचि ऋषि की कथा एवं उनकी हड्डियों से वज्र का निर्माण कर इन्द्र द्वारा व त्रासुर का वध, व त्रासुर के पूर्व जन्म की कथा, अदिति एवं दिति की संतानों एवं मरुद्गणों की उत्पत्ति का वर्णन, कश्यप द्वारा दिति को पुंसवन व्रत की विधि बताना।

सप्तम स्कन्ध - असुरों के संहार का कारण-निर्देश, शिशुपालवध एवं हिरण्याक्ष की कथा, नारद जी द्वारा युधिष्ठिर को चारों वर्णों एवं स्त्रियों के धर्म का कथन, पतिधर्म, ग हस्थ के सदाचार का निरूपण तथा ग हस्थों के लिए मोक्षधर्म की व्याख्या।

अष्टम स्कन्ध - अन्य मन्वतन्रों की कथा, गजेन्द्र एवं ग्राह की कथा, राज और ग्राह के पूर्वजन्म की कथा, समुद्र मंथन एवं मोहिनी अवतार का विवरण, भगवान् शिव का मोहिनी रूप पर मुग्ध होना एवं भगवत् कृपा से मोह पाश से मुक्ति। सात मन्वन्तरों का वर्णन, शुक्राचार्य द्वारा बलि को इन्द्र पद पर अधिष्ठित कराना, वामनावतार तथा मत्स्यावतार की कथा।

नवम स्कन्ध - वैवस्वतमनु के वंश का वर्णन, च्यवन ऋषि एवं सुकन्या की कथा, अम्बरीष और दुर्वासा की कथा, राजा मान्धाता का वर्णन, त्रिशंकु, हरिश्चन्द्र और राजा सगर की कथा, भगीरथ की कथा, रामचरित सूर्यवंशी एवं चन्द्रवंशी राजाओं का वर्णन, राजा पुरूरवा गाधि एवं विश्वामित्र का वर्णन, नहुष, ययाति की कथा, पाण्डवों और कौरवों तथा पराशर और व्यास का वर्णन।

दशम स्कन्ध - इसके दो भाग हैं - पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध और दोनों भागों में भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन है। पूर्वार्द्ध में कृष्णजन्म से लेकर कंसवध एवं श्रीकृष्ण के परममित्र उद्धव की ब्रज यात्रा तक की कथा का वर्णन है। उत्तरार्द्ध में जरासंघ का मथुरा पर आक्रमण एवं उसकी पराजय, श्रीकृष्ण का द्वारिका में दुर्गनिर्माण कर निवास करना, कालयवन का आक्रमण एवं उसकी म त्यु, भीष्मक की कन्या रुक्मिणी से श्रीकृष्ण का विवाह, श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न द्वारा शम्बरासुर का वध, श्रीकृष्ण का जाम्बवती, सत्य भामा आदि आठ पटरानियों से विवाह तथा भौमासुर को मार कर उनका सोलह सहस्त्र एकसौ स्त्रियों से विवाह करना, अनिरुद्ध उषा की कहानी और बाणासुर का वध, राजा न ग का उद्धार, बलराम का

ब्रजगमन एवं द्विविद का वध, जाम्बवती के पुत्र साम्ब से दुर्योधन की पुत्री लक्ष्मणा का विवाह, भीम द्वारा जरासंध का वध, युधिष्ठिर के राजसूय में श्रीकृष्ण द्वारा शिशुपाल का वध, महाभारत के युद्ध की तैयारी एवं बलराम का तीर्थ यात्रा के लिए प्रस्थान, सुदामा चरित, वेदस्तुति, भस्मासुर की कथा, भ गु का आख्यान और भगवान् के लीलाबिहार का वर्णन।

एकादश स्कन्ध - यादव कुल के संहार का वर्णन, वासुदेव-नारद संवाद, भागवतधर्म, भक्त के लक्षण, माया, कर्म, भगवदवतार, भक्तिहीन पुरुषों की गति एवं पूजाविधि का वर्णन, श्रीकृष्ण का परमधाम प्रस्थान, श्रीकृष्ण द्वारा संसार का मिथ्यात्व प्रतिपादन, बद्ध मुक्त भक्तों के लक्षण, सत्संग महिमा, कर्मानुष्ठान कर्मत्याग की विधि, वर्णाश्रमधर्म, ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग, द्रव्य देश आदि के गुण दोष तथा सांख्य योगादि का विस्त त विवेचन। उद्धव की बदरिकाश्रम यात्रा, यादव कुल की समाप्ति और श्रीकृष्ण का परमधाम गमन।

द्वादश स्कन्ध - श्रीकृष्ण के परमधाम जाने पर प थ्वी के राजाओं का वंश वर्णन, ब हद्रथ, नन्दिवर्धन, नन्द आदि राजाओं का वर्णन, युगधर्मो एवं कलियुग में हरिनाम कीर्त्तन की महिमा प्रलय एवं परमार्थ का निरूपण, तक्षकदंश से परीक्षित का देहान्त और जनमेजय का सर्पयज्ञ करना, मार्कण्डेय की कथा एव ंपुराणादि के लक्षण भगवान् के अंगों उपांगों का वर्णन तथा श्रीमद्भावगत के वर्ण्य-विषय का संक्षिप्त कथन, विभिन्न पुराणों की श्लोक-संख्या तथा श्री मद्भागवदत के महत्त्व का वर्णन कर ग्रंथ की समाप्ति।

ब्रह्म पुराण

यह ब्रह्म या ब्राह्म पुराण के नाम से विख्यात है। इसे समस्त पुराणों में आदि या आद्य पुराण के रूप में परिगणित किया गया है। विष्णुपुराण इस तथ्य की पुष्टि करता है और स्वयं ब्रह्मपुराण में भी इसे अग्रिम पुराण का पद प्रदान किया गया है। इसमें श्लोकों की कुल संख्या चौदह सहस्त्र कही गयी है और २४५ अध्याय हैं। पर, इस सम्बन्ध में विभिन्न पुराणों में परस्पर विरोधी तथ्य प्रकट किये गये हैं। उदाहरणार्थ नारद, विष्णु, शिव, ब्रह्मवैवर्त्त एव श्रीमद्भागवत के अनुसार इसकी श्लोक संख्या दस हजार है, पर मत्स्यपुराण स्वीकार करता है कि इसमें कुल तेरह सहस्त्र श्लोक हैं। लिंग, वाराह, कूर्म तथा पद्म पुराण में भी ब्रह्मपुराणस्थ तेरह सहस्त्र श्लोकों की बात कथित है। सम्प्रति आनन्दाश्रम से प्रकाशित संस्करण में १३७८३ श्लोक उपलब्ध होते हैं तथा उत्तर और पूर्व के नाम से ब्रह्मपुराण के दो विभाग किये गये हैं। यह वैष्णव पुराण के नाम से विख्यात है। इस पुराण के २४५ वें अध्याय में यह बात कही गई है कि यह वैष्णव पुराण है।

इस पुराण में पुराणविषयक सभी तथ्यों का आकलन है तथा तीर्थों के माहात्म्य वर्णन में विशेष रुचि प्रदर्शित की गई है।

औण्ड्र या उत्कल प्रदेश एवं इसके पावन तीर्थों एवं मन्दिरों का वर्णन इसमें अत्यन्त विस्तार के साथ प्राप्त होता है। इसके आरम्भ में कहा गया है कि नैमिषारण्य में लोमहर्षण ने ऋषियों के पास पधार कर सूत जी से विश्व के उद्भव एवं प्रलय के कथा कहने के लिये निवेदन किया। तदनन्तर सूत जी ब्रह्मा द्वारा दक्ष प्रजापति को सुनाये गये पुराण को सुनाने के लिये प्रस्तुत हुए। इसके प्रारम्भ में विश्व की स ष्टि, आदि पुरुष मनु एवं उनकी संतान की उत्पत्ति, देवताओं एवं दैत्यों के जन्म का वर्णन कर सूर्य एवं चन्द्रवंश का संक्षिप्त कथन किया गया है। इसके बीस अध्यायों में पार्वती की कथा कही गयी है और प्रथम पांच अध्यायों में सर्ग, प्रतिसर्ग एवं मन्वन्तर का वर्णन है तथा आगामी सौ अध्यायों में वंश एवं वंशानुचरित का विवरण प्रस्तुत किया गया है। इसके वर्ण्य विषयों में प थ्वी के अनेक खण्ड, स्वर्ग, नरक, तीर्थ-माहात्म्य तथा विशेष रूप से सूर्याराधना का वर्णन है। सूर्य की पूजा के प्रसंग में कहा गया है कि विश्व

के उद्भव का मूल सूर्य है और द्वादश सूर्यो की आराधना से सभी प्रकार के शत्रुओं पर विजय प्राप्त हो सकती है। विभिन्न ऋतुओं में सूर्य का तेज किस प्रकार विभिन्न रूप में परिणत होता है, और प्रत्येक मास में आदित्य मण्डल के प्रकाशित होने के कारण उसकी कितनी संज्ञाएं होती है, आदि विषयों का वर्णन इस पुराण में किया गया है। गंगा की उत्पत्ति की कथा भी इस पुराण में वर्णित है। इसमें राम और कृष्ण की कथा का विस्तारपूर्वक वर्णन है तथा वाराह, न सिंह आदि अवतारों की भी कथा कही गयी है। श्रीकृष्ण की कथा ३२ अध्यायों में समाप्त हुई है। इसके अन्तिम अध्यायों में श्राद्धकर्म, धार्मिक जीवन के नियम, वर्णाश्रमधर्म, स्वर्ग के भोग, नरक के कष्ट तथा विष्णु पूजा से प्राप्त पुण्यों का विवरण है। अन्त में सांख्य योग का विस्त त विवेचन प्रस्तुत करते हुए प्रकृति आदि तत्त्वों का वर्णन है। सांख्य शास्त्र के विवेचन में अनेक ऐसे तथ्य प्रस्तुत किये गये हैं, जो अवान्तरकालीन विषयों से नितान्त भिन्न हैं। उदाहरणार्थ इसमें सांख्य के ३६ तत्त्व कथित हैं जब कि परवर्ती ग्रन्थ २५ तत्वों को निरूपित करते हैं। इसमें सांख्य को निरीश्वरवादी दर्शन नहीं कहा गया है और इसमें ज्ञान तथा भक्ति के तत्त्वों का भी समावेश किया गया है।

इसमें महाभारत, वायुपुराण, विष्णु पुराण और मार्कण्डेय पुराण के अनेक उद्धरण प्राप्त होते हैं और कहीं-कहीं तो उक्त पुराणों के अनेक अध्यायों को अक्षरशः उद्ध त कर दिया गया है। इसी कारण विद्वान् इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि मुख्यतः इस पुराण में १७५ अध्याय ही रहे होंगे और १७६ से २४५ तक के अध्याय प्रक्षिप्त हैं। इस पुराण के उद्धरण 'कल्पतरु' तथा 'तीर्थचिन्तामणि' में प्राप्त होते हैं। तीर्थचिन्तामणि के रचयिता वाचस्पति मिश्र का आविर्भावकाल पन्द्रहवीं शती शताब्दी है। अतः इसके आधार पर इस पुराण का अनुमानित समय १२वीं शताब्दी है। 'कल्पतरु' में ब्रह्मपुराण के १५०० श्लोक प्राप्त होते हैं। कोणार्क के सूर्यमंदिर का इसमें उल्लेख होने के कारण पाश्चात्य विद्वानों एच०एच० विल्सन सवं विंटरनित्स-ने इसका समय १३वीं शती निर्धारित किया है, पर परम्परानिष्ठ अनेक प्रसंग 'महाभारत' के अनुशासनपर्व में अविकल रूप से प्राप्त होते हैं, अतः इसका समय उतना अर्वाचीन नहीं माना जा सकता। दण्डकारण्य में गौतमी नदी की श्रेष्ठता सिद्ध करने के कारण इसका रचना स्थान गोदावरी (गौतमी) प्रदेश माना जाता है। इस नदी के तीरस्थ तीर्थों का भी इस पुराण में अत्यन्त विस्त त विवरण प्राप्त होने के कारण इस तथ्य की पुष्टि होती है। इसके प्रारम्भ से लेकर ६६ अध्यायों तक का प्रणयन उत्कल प्रान्त में हुआ होगा। 'तीर्थचिन्तामणि' के उद्धरणों का ब्रह्मपुराण में प्राप्त होने के कारण आधुनिक विद्वान् प्रचलित ब्रह्मपुराण की रचना का समय तेरहवीं शताब्दी मानना अधिक उपयुक्त समझते हैं। प्राचीन विद्वानों ने इस मत का खण्डन करते हुए ब्रह्मपुराण का प्रणयन-काल अधिक पुराना सिद्ध किया है। उनका कथन है कि ऐतरेय ब्राह्मण में हरिश्चन्द्र रोहित एवं शुनःशेप की कथा जिस रूप में वर्णित है, उसी विस्तार के साथ ब्रह्मपुराण में भी उपलब्ध होती है। जब तक वैज्ञानिक ढंग से इस पुराण का परिशीलन नहीं किया जाता, तब तक इसके काल-निर्णय के सम्बन्ध में कुछ निश्चित विचार प्रकट करना कठिन है।

पद्मपुराण (पाद्मपुराण)

पद्मपुराण ब हदाकार पुराण है, जिसमें पचास हजार श्लोक एवं ६४१ अध्याय हैं। इसके दो रूप प्राप्त होते हैं-प्रकाशित देवनागरी संस्करण एवं हस्तलिखित बंगीलसंस्करण। आनन्दाश्रम (१८६४ ई०) से प्रकाशित देवनागरी संस्करण में छह खण्ड हैं, जिसका संपादन बी०एन० माण्डलिक ने किया था। वे हैं-आदिखण्ड, भूमिखण्ड, ब्रह्मखण्ड, पातालखण्ड, स ष्टिखण्ड और उत्तरखण्ड। इस संस्करण के उत्तरखण्ड में इस बात के संकेत हैं कि मुख्यतः इसमें पांच ही खण्ड थे और छह खण्डों की कल्पना कालान्तर में की गयी। इसपुराण की श्लोक-संख्या विभिन्न पुराणों में भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रस्तुत की गयी है। 'मत्स्यपुराण' के अनुसार पद्मपुराण में ५५ हजार

श्लोक हैं, तो 'ब्रह्मपुराण' के मतानुसर श्लोकों की संख्या ५६ हजार है। 'श्रीमद्भागवत' में पद्मपुराण की श्लोक-संख्या ५५ हजार है। इसी प्रकार खण्डों के क्रम में भी मतभेद दिखाई पड़ता है। बंगाली संस्करण, जो हस्तलेखों में ही प्राप्त है, में पांच खण्ड हैं। स्वंय पद्मपुराण' में भी इस तथ्य का उल्लेख है कि इसमें पांच खण्ड हैं। किसी-किसी पुस्तक में इसके सात खण्डों का भी वर्णन है-स ष्टि खण्ड, भूमि खण्ड, स्वर्ग खण्ड, ब्रह्म खण्ड, पाताल खण्ड, उत्तर खण्ड तथा क्रिया खण्ड। सम्प्रत्ति प्रचलित पद्मपुराण में पांच ही ख्ण्ड हैं-स ष्टिखण्ड, भूमिखण्ड, स्वर्गखण्ड, पातालखण्ड तथा उत्तर खण्ड।

१. स ष्टिखण्ड - यह इस पुराण का भूमिका अंश है, जिसमें ८२ अध्याय हैं। इसें लोमहर्षण द्वारा अपने पुत्र उग्रश्रवा को नैमिषारण्य में एकत्र मुनियों के समक्ष पुराण सुनाने के लिए भेजने का वर्णन है और वे शौनक ऋषि के अनुरोध पर ऋषियों को पद्मपुराण की कथा सुनाते हैं। इसके नाम का रहस्योद्घाटन करते हुए कहा गया है कि इसें स ष्टि के प्रारम्भ में कमल या पद्म से ब्रह्मा की उत्पत्ति का कथन हुआ है, अतः इसे पद्मपुराण की संज्ञा प्राप्त है। स ष्टिखण्ड पांच पर्वों में विभक्त है। इसमें इस प थ्वी को पद्म कहा गया है तथा कमल पुष्प पर स्थित ब्रह्मा द्वारा विस्त त ब्रह्माण्ड की स ष्टि का निर्माण करने के सम्बन्ध में किए गए संदेह का इसी कारण निराकरण किया गया है कि प थ्वी कमल है।

तच्च पद्मं पुराभूतं प थ्वीरूपमनुत्तमम्।
यत्यपद्मं सा रसादेवी प थिवी परिचक्षते।।

इस खण्ड में स ष्टि, प्रतिस ष्टि, वंश, मन्वन्तर एवं वंशानुचरित पुराण-विषयक पांच विषयों का वर्णन है। स ष्टिखण्ड के पांच पर्वों के नाम हैं-पौष्कर-पर्व, तीर्थ पर्व, त तीय पर्व, चतुर्थ पर्व एवं मोक्ष पर्व।

पौष्कर पर्व - इस पर्व में देवता, पितर, मनुष्य एवं मुनि-सम्बन्धी नौ प्रकार की स ष्टि वर्णित है। स ष्टि की उत्पत्ति का वर्णन करने के पश्चात् प थु-चरित्र सूर्य वंश एवं चन्द्र वंश का वर्णन हुआ है। इसी खण्ड में राम एवं कृष्ण की कथा भी कही गयी है ओर देवता तथा दानवों की उत्पत्ति के क्रम में हिरण्यकशिपु एवं बाण के उपाख्यानों का भी समावेश किया गया है। इसमें पितरों एवं श्राद्धों से सम्बद्ध विषयों का विवरण है और देवासुर संग्राम का भी वर्णन हुआ है। इसी खण्ड में पुष्कर तीर्थ का प्रसंग आया है, जो ब्रह्मा के कारण पवित्र माना जाता है। इस तीर्थ का निर्णय ब्रह्मा ने ही किया था। इसमें उसकी तीर्थ-रूप में वंदना भी की गयी है।

तीर्थ पर्व - इस खण्ड में अनेक तीर्थों, पर्वत, द्वीप तथा सप्तसागरों का उल्लेख है। इसके उपसंहार में बताया गया है कि सभी तीर्थों में भगवान् श्रीकृष्ण का नाम स्मरण ही श्रेष्ठ तीर्थ है तथा उनके नाम का उच्चारण करने वाले व्यक्ति सारे संसार को तीर्थमय बना देते हैं

त तीय पर्व में दक्षिणा देने वाले राजाओं का वर्णन है और चतुर्थ में राजाओं का वंशानुकीर्तन है। अन्तिम पर्व में मोक्ष तथा उसके साधनों का वर्णन करने के पश्चात् समुद्र-मंथन, प थु की उत्पत्ति, पुष्कर तीर्थ के निवासियों का धर्म, व त्रासुर-संग्राम, वामनावतार, मार्कण्डेय की कथा, कार्तिकेय की उत्पत्ति, रामचरित एवं तारकासुर वध की कथाएं विस्तारपूर्वक वर्णित हैं।

भूमि खण्ड - इस खण्ड में अनेक आख्यान हैं। इसका प्रारम्भ सोमशर्मा की कथा से होता है, जो प्रह्लाद के रूप में उत्पन्न हुआ। भूमि का वर्णन करने के पश्चात् अनेकानेक तीर्थों की पवित्रता सिद्ध करने के लिए बहुत से आख्यानों का समावेश हुआ है। सकुला की कथा में बताया गया है कि किस प्रकार पत्नी तीर्थ का रूप धारण कर लेती है। इस खण्ड में सुव्रत, प थु, वुत्रासुर, वैण, उग्रसेन, सुकर्मा, ययाति, दिव्यादेवी, अशोक सन्दर्श के उपख्यान वर्णित हैं और जैन धर्म का भी उल्लेख है। च्यवन ऋषि की कथा एवं विष्णु तथा शिव की एकताविषयक

तथ्यों का निरूपण इस खण्ड की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इसमें ययाति तथा मातली के आध्यात्मिक संवाद में विष्णु भक्ति की महनीतयता प्रकट की गयी है। इनके अतिरिक्त यहां ब्रह्मचर्य, दान तथा मारवधर्म के अनेक विषय सम्मिलित किये गये हैं।

स्वर्गखण्ड - इस खण्ड में लोकों का वर्णन है और देवता, वैकुण्ठ, भूतों, पिशाचों, विद्याधरों, अप्सरा तथा यज्ञों के लोक का विवरण प्रस्तुत किया गया है। इसके प्रारम्भ में शकुन्तला और दुष्यन्त की प्रसिद्ध कथा कही गयी है, जो महाभारत शकुन्तलोपाख्यान की अपेक्षा महाकवि कालिदासकृत अभिज्ञान शाकुन्तल के अधिक निकट है। अप्सराओ के वर्णन में राजा पुरुरवा एवं उर्वशी का आख्यान वर्णित है तथा कर्मकाण्ड, विष्णुपूजा पद्धति, वर्णाश्रमधर्म एवं अनेक आचारों का समावेश है। इसमें नक्षत्र तथा आकाश के वर्णन-क्रम में ध्रुवलोक एवं ध्रुवचरित की कथा वर्णित है और दिवोदास, राजा शिवि, उशीनर, मरुत् हरिश्चन्द्र, मान्धाता आदि के आख्यानों का उल्लेख किया गया है। इस खण्ड में राजधर्म का भी वर्णन है।

पाताल खण्ड - इस खण्ड में नाग लोक का वर्णन है और प्रसंगवश रावण का उल्लेख होने से सम्पूर्ण रामचरित का विशद वर्णन किया गया है। इसी खण्ड में कृष्ण की महिमा एवं कृष्ण तीर्थ तथा नारद के स्त्री-रूप की कथा कही गई है। इसके अन्त में बारहों महीनों के पर्वों एवं उनके महत्व का वर्णन कर भारतीय भूगोल-सम्बन्धी प्रचुर सामग्री का आकलन किया गया है। इस खण्ड में रामायण की जो कथा उपन्यस्त है, वह महाकवि कालिदास कृत 'रघुवंश महाकाव्य' के अत्यधिक निकट है तथा रामायण की कथा के साथ उसका अल्प या आंशिक साम्य दिखाई पड़ता है। इसमें भवभूति-कृत 'उत्तर रामचरित' नाटक के समान राम के उत्तर चरित का वर्णन है। अन्त में अष्टादश पुराणों का सार प्रस्तुत कर श्रीमद्भागवत की महिमा का बखान किया गया है।

उत्तर खण्ड - इस खण्ड का प्रारम्भ महेश-नारद-संवाद से हुआ है तथा नाना प्रकार के आख्यानों एवं वैष्णव धर्म समबन्धी व्रतों एवं उत्सवों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। इसमें जलंधर नामक दैत्य के चरित का वर्णन अत्यन्त विस्तारपूर्वक हुआ है तथा तुलसी के जन्म एवं उसकी महिमा भी कही गयी है। उत्तरखण्ड में ऋतुओं एवं महीने के माहात्म्य एवं भारत के अनेक तीर्थों एवं उनकी महिमा का विशद विवेचन है। देवों तथा गंगा का माहात्म्य का भी वर्णन है और गंगा के तीर पर स्थित अनेक विध तीर्थों का सर्वेक्षण हुआ है। इसमें विष्णु के प्रिय कार्तिक एवं माघ मास के व्रतों का सविस्तार वर्णन कर परिशिष्ट के रूप में 'क्रियायोग सार' नामक अध्याय में विष्णु की भक्ति एवं गंगा स्नान के महत्व का दिग्दर्शन कराया गया है। यह खण्ड तुलसी के महात्म्य एवं एकादशी व्रत की महिमा के वर्णन से समाप्त होता है।

पद्म पुराण के वर्ण्य विषयों के सर्वेक्षण से ज्ञात होता है कि यह वैष्णव भक्ति प्रतिपादक पुराण है जिसमं भगवन्नामकीर्त्तन की विधि एवं अनेक प्रकार के नामापरा पणों का उल्लेख है। इसके प्रत्येक खण्ड में भक्ति की महिमा गायी गयी है और भगवत्स्म ति, भगवद्भक्ति, भगवत्तत्त्वज्ञान तथा भगवत्तत्त्व के साक्षात्कार को मूलविषय मान कर उनका विशद विवेचन हुआ है। इसके वर्ण्यविषयों में अधोलिखित विषयों का समावेश कर उनकी महत्ता सिद्ध की गयी है-श्राद्ध-माहात्म्य, तीर्थ-महिमा, आश्रमधर्म-निरूपण, नाना प्रकार के व्रतों एवं स्नान, ध्यान तथा तर्पण का विधान, दान स्तुति, सत्संग का माहात्म्य, दीर्घायुत्व के सहज साधन, त्रिदेवों का एकत्व, मूर्तिपूजा, ब्राह्मण एवं गायत्री का महत्व, गौ तथ गोदान की महिमा, द्विजोचित आचार-विचार, पित तथा पतिभक्ति, विष्णुभक्ति, अद्रोह, पांच यज्ञों का महत्व, कन्यादान की महिमा, सत्य भाषण तथा लोभ-त्याग का महत्त्व, देवालय-निर्माण, पोखरा-खुदाना, देव पूजन, गंगा-गणेश एवं सूर्य की महिमा तथा उनकी उपासना के फलों की महत्ता, पुराणों की महिमा, भगवन्नाम, ध्यान, प्राणायाम आदि।

पदम्पुराण का समय-निर्धारण-सम्बन्धी अद्यावधि कोई सुनिश्चित विचार प्राप्त नहीं होता और

संबद्ध विषय में विद्वानों में मत वैभिन्न दिखायी पड़ता है। श्रीमद्भागवत का उल्लेख, राधा के नाम की चर्चा, रामानुज का वर्णन आदि विषयों के आधार पर इसे रामानुजाचार्य की परवर्त्ती रचना माना जाता है। श्री अशोक चटर्जी ने अपने एक शोध परक निबन्ध में यह सिद्ध किया है कि पद्मपुराण में राधा का नामोल्लेख इस तथ्य का द्योतक है कि इस पर रामचरित सम्प्रदाय का प्रभाव है। विद्वानों के अनुसार इसकी रामायण की कथा पर 'रघुवंश' और 'उत्तर रामायण' की कथा का प्रभाव है और स्वर्ग खण्ड में वर्णित शकुन्तोलापाख्यान महाकवि कालिदास की शकुन्तला से अनुप्राणित है। उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर इसका रचना-काल पांचवी शती का परवर्ती होना चाहिये। ठीक इसके विपरीत डॉ० विन्टर नित्स एवं डॉ० हरिदत्त शर्मा ने यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया है कि महाकवि कालिदास कृत शकुन्तला नाटक पद्मपुराण की कथा से प्रभावित है, न कि उनका ऋण पद्मपुराण पर है। अतः, परस्पर विरोधी मतों के आधार पर इस पुराण का रचना काल अधिक अर्वाचीन नहीं माना जा सकता और इस संबंध में भी अभी पर्याप्त शोध अपेक्षित है।

विष्णु पुराण

विष्णु पुराण वैष्णवों का प्रमुख ग्रन्थ माना जाता है। इसकी महत्ता इस रूप में सिद्ध है कि वैष्णव आचार्य रामानुज ने अपने 'श्रीभाष्य' में प्रमाण स्वरूप इसके उद्धरण दिये हैं। इसमें एकमात्र विष्णु ही सर्वोच्च देवता के रूप में प्रतिष्ठित हैं और इसी रूप में उनकी महिमा का बखान कर उन्हें ब्रह्मा तथा शिव से अभिन्न माना गया है। इस पुराण का विभाजन अंशों में हुआ है, जिनकी संख्या ६ है और प्रत्येक अंश अनेक अध्यायों में विभक्त है और उनकी संख्या कुल १२६ है। इस पुराण में छह सहस्त्र श्लोक हैं। पर, इस सम्बन्ध में नारदीय एवं मत्स्य पुराण में क्रमशः चौबीस एवं २३ हजार श्लोक बताये हैं। इस पुराण की तीन टीकाओं का पता चला है-श्रीधर स्वामीकृत टीका, विष्णुचित्त रचित विष्णुचित्तीय तथा रत्नगर्भभट्टाचार्य प्रणीत वैषणवकूत चन्द्रिका। इस पुराण के वक्ता पराशर हैं और श्रोता मैत्रेय अर्थात् दोनों के संवाद के रूप में इसकी रचना हुई है।

विष्णु सम्बन्धी पुराण होते हुए भी इसमें विष्णु के व्रतों, पूजापद्धतियों एवं तीर्थों का वर्णन नहीं है। इसके प्रथम अंश में २२ अध्याय हैं ओर चौबीस तत्त्वों के विचार के साथ जगत् के उत्पत्तिक्रम का वर्णन कर विष्णु की महिमा गायी गयी है। ब्रह्मा की आयु और काल का स्वरूप, उनकी उत्पत्ति, वराह द्वारा प थ्वी का उद्धार, ब्रह्मा द्वारा प थ्वी की रचना, अविद्यादि विविध सर्गों का वर्णन, चातुर्वर्ण्यव्यवस्था एवं प्रलय का वर्णन करने के पश्चात् ध्रुव, प्रह्लाद आदि की कथा का कथन कर विष्णु भगवान् की विभूति और जगत् की व्यवस्था का वर्णन है।

द्वितीय अंश में १६ अध्याय हैं। इसके अन्तर्गत भूगोल, खगोल तथा सात पाताल लोकों के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के नरकों एवं भगवन्नाम के माहात्म्य का वर्णन है। इसमें सूर्य, नक्षत्र, राशियों की व्यवस्था, कालचक्र, लोकपाल, गंगावतरण ज्योतिश्चक्र, शिशुकुमारचक्र, द्वादश सूर्यों के नाम, अधिकार एवं सूर्य तथा वैष्णवी शक्ति का मनोरम विवरण प्राप्त होता है। इसी खण्ड में जड़ भरत का चरित्र भी वर्णित है। इसमें भरत-चरित्र के वर्णन में भारत वर्ष के नामकरण का भी प्रसंग आया है।

त तीय अंश में १८ अध्याय हैं और आश्रम-विषयक कर्त्तव्यों का निर्देश कर वैदिक शाखाओं का विस्त त विवेचन हुआ है। इसमें चतुर्युग के अनुसार व्यासों के भिन्न-भिन्न नामों का विवरण प्रस्तुत कर उनकी संख्या २८ बतलायी गयी है और ब्रह्मज्ञान के माहात्म्य का वर्णन किया गया है। इसी अंश में व्यास तथा उनके शिष्यों द्वारा किये गये वैदिक विभागों तथ कई सम्प्रदायों का भी उल्लेख है। तत्पश्चात् अष्टादश पुराणों की परिगणना कर समस्त शास्त्रों एवं कलाओं की सूची प्रस्तुत हुई है। इसके भीतर भगवान् विष्णु की आराधना तथा चातुर्वर्ण्यधर्म का प्रतिपादन

कर ब्रह्मचर्यादि आश्रमों, जातकर्म नामकरण, विवाह संस्कार की विधि, ग हस्थ-सम्बन्धी आचार, श्राद्ध तथा प्रेतकर्म का भी समावेश किया गया है।

चतुर्थ अंश में २४ अध्याय हैं और ऐतिहासिक सामग्री का चयन किया गया है। इसमें राजवंशों की उत्पत्ति दिखाकर सूर्य एवं चन्द्रवंशी नरेशों की वंशावली प्रस्तुत की गयी है। इसमें पुरूरवा-उर्वशी-संवाद, राजा ययाति, पाण्डवों की कथा, कृष्ण चरित, महाभारत एवं रामायण की कथा का निरूपण कर भविष्य में होने वाले मगध, शिशुनाग, नन्द, मौर्य, आन्धभ त्य प्रभ ति राजवंशों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। पंचम अंक के ३८ अध्यायों में सम्पूर्ण कृष्ण चरित एवं कृष्ण लीला का वर्णन है। षष्ठ अंश में कुल आठ अध्याय हैं और कलिधर्म निरूपण, व्यास द्वारा कलियुग, शूद्र और स्त्रियों का महत्त्व वर्णन, प्राकृत प्रलय का निरूपण, आध्यात्मिकादि त्रिविधतापों का वर्णन तथा कृत युग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग का वर्णन कर कलि के दोषों को भविष्य कथन के रूप में दिखाया गया है। अन्तिम अध्याय में सम्पूर्ण पुराण का सारांश देकर विष्णु की स्तुति एवं प्रार्थना में पुराण की समाप्ति होती है।

विष्णु पुराण के रचना-काल के सम्बन्ध में विभिन्न प्रकार के मत प्राप्त होते है। अंतरंग परीक्षा के आधार पर इसका काल-निर्णय किया जा सकता है। इसमें ब्रह्म पुराण के पांच श्लोक उद्ध त हैं विष्णु ४।१०।२३।२७)। याज्ञवल्क्य स्म ति की मिताक्षरा टीका में नारायण बलि के सम्बन्ध में विष्णु पुराण के १४ श्लोक आये हैं और कल्पतरु, स्म ति-चन्द्रिका तथा अपरार्क ने इसके कई सौ श्लोकों को ग्रहण कर लिया है। विष्णु-पुराण के दो श्लोक काव्य प्रकाश के रसध्वनि प्रकरण में उद्ध त हैं। इन आधारों तथा कलियुग के वर्णन में गुप्तकाल का इतिहास प्रस्तुत करने के कारण इसका समय १०० ई० से २०० ई० के मध्य माना गया है। तमिल ग्रन्थ मणिमेखले में विष्णु पुराण का उल्लेख होने से डॉ० रामचन्द्र दीक्षितार इसका आर्विभावकाल ईस्वी पूर्व द्वितीय शती मानते हैं जो अधिक विश्वसनीय प्रतीत होता है।

वायुपुराण

वायुपुराण में ऐतिहासिक तत्त्वों का आधिक्य है तथा अनेक पुराणों की अपेक्षा इसमें वैज्ञानिक तथ्यों की अधिकता है। इस पुराण की रचना असीमकृष्ण के शासनकाल में हुई थी। अन्य पुराणों का प्रवचन नैमिषारण्य में हुआ था, पर इस पुराण में इस प्रकारके संकेत प्राप्त होते हैं कि वायुपुराण का प्रवचन कुरुक्षेत्र में हुआ। इसके द्वितीय अध्याय में इस प्रकार का कथन है कि इसका अतिप्राचीन प्रवचन नैमिषारण्य में ही हुआ था और यह समय मन्वन्तर का आदिकाल रहा होगा। स ष्टि के प्रारम्भ में मुनियों द्वारा प्रार्थना किये जाने पर वायुदेवता ने इस पुराण को सुनाया था और 'वातारणि ऋषि' इस पुराण के प्रवक्ता हुए थे। इसलिये इसे वायुप्रोक्त संहिता भी कहते हैं।

वायुपुराण और शिवपुराण के सम्बन्ध में विचित्र प्रकार की कल्पनाएं प्रसिद्ध हैं। कतिपय विद्वान् दोनों को एक ही (पुराण) मानते हैं और कुछ इनके स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकार करते हैं। 'विष्णु', 'मार्कण्डेय', 'कूर्म', 'वाराह', 'लिंग', 'ब्रह्मवैवर्त्त' एवं 'भागवतपुराण' में 'शिवपुराण' का उल्लेख है; किन्तु 'नारद', 'मत्स्य', तथा 'देवी भागवत' में वायु की चर्चा की गयी है। पर, सम्प्रति दोनों ही पुराण प थक्-प थक् रूप में उपलब्ध हैं और उनके वर्ण्य-विषयों में भी पर्याप्त अन्तर है। वायुपुराण ११२ अध्यायों से युक्त है, जिसकी श्लोकसंख्या ग्यारह सहस्र है। यह पुराण चार खण्डों-प्रक्रिया, अनुषंग,उपोद्घात तथा उपसंहार-में विभक्त है, जिन्हें पाद कहा गया है। इसके वर्ण्य विषयों में स ष्टिक्रम एवं राजाओं की वंशावली है। आरम्भ के कई अध्यायों में स ष्टि का विस्त त विवरण प्रस्तुत करने के पश्चात् भौगोलिक सामग्री का चयन किया गया है, जिसमें जम्बू द्वीप का विशेष रूप से वर्णन कर अन्य द्वीपों का भी परिचय दिया गया है। इसके पश्चात्

अनेक अध्यायों में खगोल-वर्णन, युग, ऋषि, तीर्थ एवं यज्ञों के विवरण दिये गये हैं। इसमें कई राजाओं के वंशों का वर्णन कर प्रजापति वंश का उल्लेख हुआ है और प्रजावर्ग तथा ऋषिवंशों के अन्तर्गत प्राचीन बाह्यवंशों का ऐतिहासिक विवेचन प्रस्तुत किया गया है। वायुपुराण के ६६ अध्याय में प्राचीन राजवंशों की विस्त त वंशावलियाँ दी गई हैं और अनेक अध्यायों में श्राद्ध एवं प्रलय का वर्णन है। इस पुराण का विवेच्य विषय है-शिवभक्ति एवं उसकी महत्ता का निदर्शन। इसके समस्त आख्यान शिवभक्तिपरक हैं, पर यह पुराण शिवसम्बन्धी पूर्वाग्रह एवं कट्टरता की भावना से रहित है तथा इसमें अन्य देवताओं के प्रति भी श्रद्धास्पद तथ्य प्रस्तुत कर उनको स्थान दिया गया है। इसके कई अध्यायों में विष्णु के अवतारों की गाथा दी गयी है और ११ से १५ अध्यायों तक यौगिक प्रक्रिया का सविस्तर वर्णन है। इस पुराण की समाप्ति शिव के ध्यान में लीन होकर योगियों द्वारा शिवलोक की प्राप्ति में होती है।

रचना कौशल के वैशिष्ट्य, सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर तथा वंशानुचरित के अनुकीर्त्तन के कारण वायुपुराण का महत्व असंदिग्ध है। इस पुराण के १०४ से ११२ अध्यायों में वैष्णवमत का जो पुष्टिकरण है, उसे प्रक्षिप्त माना जाता है। पंडितों का अनुमान है कि किसी वैष्णव भक्त ने इसे बाद में जोड़ दिया होगा इसमें राधा का भी नामोल्लेख है और १०४ वें अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण की 'मधुर लीला' का गान किया गया है। इसके अन्त के आठ अध्यायों में गयामाहात्म्य का विस्तारपूर्वक वर्णन है और उसके देवता के रूप में गदाधर नामक विष्णु का उल्लेख है। इसके प्रक्रिया पाद में ६ अध्याय हैं और उपोद्घात पाद ७ से ६४ अध्याय तक है। अनुषंगपाद में ६५ से ६६ तक अध्याय आते हैं और १०० से ११२ तक के अध्याय उपसंहारपाद में हैं।

इस पुराण में कल्प, स ष्टि एवं सांख्यदर्शन का विलक्षण प्रकार से वर्णन उपलब्ध होता है। अन्य पुराणों में जहां तीस कल्पों के विवरण प्राप्त होते हैं वहां इसमें २८ कल्पों का ही विवेचन है। कल्पों की सूची इस प्रकार है'भव, भुव, तप, भेव, रम्भ, ऋतु, क्रतु, वह्नि, हव्यवाहन, सावित्र, भुव, उशिक, कुशिक, गन्धर्व, ऋषज्, षड्ज, मार्जालीय मध्यम, वैराजक, निषाद, पंचम, मेघवाहन, चिन्तक, आकूति, विज्ञाति, मन, भाव, ब हत्। इसमें स ष्टि की एक-एक संख्या को कल्प मान लिया गया है। इसके प्रारम्भ में यह बताया गया है कि विश्व की उत्पत्ति के एकमात्र कारण महेश्वर हैं और वे आनन्दस्वरूप हैं।

वायुपुराण का वैशिष्ट्य 'पाशुपत योग' के वर्णन में है जो प्राचीन योगशास्त्र के स्वरूप के परिज्ञान के लिए अत्यन्त उपादेय है।

इस पुराण का उल्लेख बाणभट्ट ने 'हर्षचरित' एवं 'कादम्बरी' दोनों ही ग्रन्थों में किया है-पुराणे वायु प्रलपितम्। इससे पता चलता है कि यह उस समय तक अधिक लोकप्रिय हो गया था। शंकराचार्य के ब्रह्मसूत्र भाष्य में 'वायुपुराण' के उद्धरण प्राप्त होते हैं और 'महाभारत' के वनपर्व में इसका स्पष्ट निर्देश प्राप्त होता है। इस द ष्टि से इसकी प्राचीनता सर्वविदित है। आधुनिक विद्वान् डॉ० हाजरा वायुपुराण में गुप्त राज्य के आरम्भिक काल की सीमा का उल्लेख प्राप्त कर इसका समय ४०० ई० के आस-पास मानते हैं, पर इसके पूर्ववर्ती होने के भी प्रमाण विद्यमान हैं।

नारदीयपुराण या ब हन्नारदीय पुराण

नारदीय पुराण विष्णुभक्तिपरक पुराण है, जो प्रसिद्ध विष्णुभक्त नारद के नाम पर रचित है। इसमें नारद जी विष्णुभक्ति का प्रतिपादन करते हैं। पर, इसे केवल भक्ति ग्रन्थ नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इसमें वैष्णवों के अनुष्ठानों एवं सम्प्रदायों तथा तत्सम्बन्धी दीक्षा का विधान है। इस पुराण में सभी पुराणों की विषय-सूची दी गई है और अनेक तीर्थों के माहात्म्य प्रदर्शित किये गये हैं। उदाहरणार्थ गंगा माहात्म्य, गया माहात्म्य, काशी माहात्म्य, पुरुषोत्तम माहात्म्य,

प्रयाग माहात्म्य, कुरुक्षेत्र माहात्म्य, हरिहर माहात्म्य, वदरिकाश्रम माहात्म्य, कामोदामाहात्म्य, प्रभासतीर्थ, पुष्कर माहात्म्य, गौतमाश्रम माहात्म्य, त्र्यम्बक माहात्म्य, सेतु माहात्म्य, नर्मदातीर्थ माहात्म्य, अवन्ती माहात्म्य, मथुरा माहात्म्य तथा व न्दावन माहात्म्य को लिया जा सकता है।

'मत्स्य पुराण' में कहा गया है कि इस पुराण की कथा में नारद ने ब हत्कल्प के प्रसंग में धर्म का उपदेश दिया है। इस पुराण में २५ हजार श्लोक हैं और पूर्व तथा उत्तर के नाम से दो खण्ड हैं। पूर्व खण्ड में कुल १२८ अध्याय हैं और उत्तर खण्ड में ८२ अध्याय। सम्प्रति इस पुराण के श्लोको को जोड़ने से उनकी संख्या १८११० होती है। इसके उत्तर भाग में वैष्णव सम्प्रदाय का विशेष रूप से वर्णन कर उनका महत्व प्रदर्शित किया गया है, पर पूर्वभाग में साम्प्रदायिक पूर्वाग्रह के दर्शन नहीं होते। पौराणिक क्रम से 'विष्णु पुराण' को छठा स्थान प्राप्त है। कतिपय विद्वान् सभी पुराणों की विषयानुक्रमणिका को देखकर इसे अर्वाचीन पुराण कहते हैं, पर इस विवरण को परवर्ती प्रक्षेप कहा जा सकता है। प्रो० एच०एच० विल्सन ने इसे महापुराण नहीं स्वीकार करते क्योंकि इसमें पुराण-विषयक पंच लक्षणों का अभाव है और इसे विष्णुभक्तिपरक ग्रन्थ कहा जा सकता है। वें इसका समय सोलहवीं शताब्दी मानते हैं। पर, यह पुराण इतना अर्वाचीन नहीं है, क्योंकि इसका उल्लेख अलबेरुनी के ग्रन्थ में प्राप्त होता है जिसका समय ११वीं शताब्दी है। ब हन्नारदीय पुराण के अतिरिक्त एक नारद उपपुराण भी प्राप्त होता है, जिसमें ३६ अध्याय तथा ३६०० श्लोक हैं। यह विशुद्ध विष्णुपरक साम्प्रदायिक रचना है। सम्भवतः इसी को देखकर विद्वानों ने नारदीय पुराण को उपपुराण मान लिया है, अतः नारद या नारदीय पुराण से अन्तर स्थापित करने के लिये इसे ब हन्नारदीय पुराण कहा जाता है। इस पुराण में विष्णुभक्ति को ही मोक्ष का एकमात्र साधन मानकर अनेक अध्यायों में विष्णु, राम, हनुमान्, कृष्ण, काली तथा महेश के मन्त्रों का विधान सहित वर्णन प्राप्त होता है। इस पुराण का प्रणयन सूत और शौनक के वार्त्तालाप के रूप में हुआ है। इसके प्रारम्भ में स ष्टि-क्रम का संक्षिप्त वर्णन कर नाना प्रकार की धार्मिक कथाओं का विवरण है। इसके वर्णित विषय हैं-मोक्ष, धर्म, नक्षत्र, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, निरुक्त, ग हविचार, मन्त्रसिद्धि, देवताओं के मन्त्रों की अनुष्ठान-विधि, वर्णाश्रम यर्म, श्राद्ध, प्रायश्चित, सांसारिक कष्ट तथा भक्ति द्वारा मोक्ष की प्राप्ति। इसमें तिथियों के व्रत का भी वर्णन प्राप्त होता है। उत्तर भाग में विष्णु की भक्ति का निरूपण तथा भक्ति के अधीनों का वर्णन कर नियोगाचरण निरूपण एवं यम-विलाप का समावेश है। वसु का ब्रह्म के निकट गमन का रोचक व त्तान्त इसमें आया है और मोहिनी-तीर्थ सेवन की विस्त त चर्चा की गयी है।

मार्कण्डेय पुराण

मार्कण्डय ऋषि के नाम पर इस पुराण का नामकरण किया गया है, जो इसके प्रवक्ता है। 'शिवपुराण' के उत्तर खण्ड में इस प्रकार का कथन है कि मार्कण्डेय मुनि इस पुराण के वक्ता हैं और यह सप्तम पुराण है। इस पुराण की मौलिकता, प्राचीनता और यथार्थता असंदिग्ध है। इसका विभाजन अध्यायों में हुआ है, जिनकी संख्या १३७ है, पर कहीं-कहीं १३८ अध्यायों का भी उल्लेख हुआ है। इसमें कुल नौ हजार श्लोक हैं। यह पुराण जैमिनी प्रश्नकर्त्ता है और उनके प्रश्नों के उत्तर मार्कण्डेय ने दिये हैं। इसका प्रारम्भ स ष्टि के वर्णन से न होकर 'वसु' के शाप की कथा से होता है। इसमें जैमिनी द्वारा सुनायी गयी कथा चार पक्षियों के माध्यम से कथित है। विंध्यगिरि पर चार पंडित पक्षी रहते थे, जिनके पास जाकर जैमिनी ने चार प्रश्न किये पक्षियों ने उत्तर के रूप में कहा कि भगवान् के चार व्यूह ही प थ्वी पर अवतार ग्रहण कर संसार की स ष्टि, पालन एवं संहार करते हैं। इसी क्रम में चारों व्यूहों द्वारा धारण किये गये अवतारों का भी विवरण है। इन पक्षियों ने द्रौपदी के पंचपतित्व एवं उसके पुत्रों से सम्बद्ध प्रश्न का भी समाधान किया है। उनके अनुसार पूवर्जन्म में पांचों पाण्डव एक ही

थे और कारण विशेष से अगले जन्म में प थक्-प थक् रूप में उत्पन्न हुए इसी प्रकरण मे राजा हरिश्चन्द्र और विश्वामित्र की भी कथा आती है।

'मार्कण्डेयपुराण' में ३१वें अध्याय के पश्चात् इक्ष्वाकुचरित, तुलसीरचित, रामकथा, कुशवंश, सोमवंश, पुरुरवा, नहुष तथा ययाति का व त्त, कृष्ण-लीला, द्वारिकाचरित, सारख्या कथा प्रप जसत्त्व एवं मार्कण्डेय की कथा वर्णित है। इस पुराण के प्रारम्भ में महाभारत-विषयक चार प्रश्न उठाये गये हैं और उनका उत्तर पूर्वोक्त चार पक्षियों द्वारा दिलाया गया है। इसमें अनेक पौराणिक आख्यानों के अतिरिक्त ग हस्थ धर्म, श्राद्ध, दैनिकचर्या, नित्यकर्म, व्रत तथा उत्सव-सम्बन्धी विषय वर्णित हैं तथा आठ अध्यायों में योगशास्त्र का विस्त त विवेचन है। इस पुराण में अनेक दार्शनिक बातों का भी उल्लेख है और प्राणियों के जन्म तथा म त्यु के पश्चात् प्राप्त होने वाले अनेक लोकों का कथन किया गया है। इसी क्रम में कार्त्तवीर्य अर्जुन की कथा, दत्तात्रेय का चरित तथा सती मदालसा की कहानी कही गयी है। तदनन्तर स ष्टि, भुवनकोश एवं मन्वन्तर आदि पौराणिक विषयों का विवेचन हुआ है। इसमें विश्वविश्रुत धर्मग्रन्थ 'दुर्गासप्तशती' का समावेश किया गया है, जिसमें तीन चरित हैं। प्रथम चरित में मधुकैटभ-वध, मध्यमचरित में महिषासुरवध तथा उत्तरचरित में शुम्भनिशुम्भ एवं उनके सेनाध्यक्षों-चण्ड, मुण्ड तथा रक्तबीज-का वध वर्णित है। इसमें दुर्गा को स ष्टि की मूलशक्ति मानकर विश्व की मूलचितिशक्ति के रूप में उनका वर्णन किया गया है। इस पुराण में विष्णु कर्मशीलदेव के रूप में वर्णित हैं और भारतवर्ष को कर्मशील देश माना गया है। इसके अन्तिम २७ अध्यायों में सूर्यवंश का वर्णन कर 'दम' के चरितवर्णन के साथ पुराण की समाप्ति की गयी है।

अग्निपुराण

अग्नि द्वारा वसिष्ठ को उपदेश दिये जाने के कारण इस पुराण का नाम अग्नि पुराण है। पौराणिक क्रम से इसे अष्टम स्थान प्राप्त है। यह पुराण भारतीय कला, दर्शन, संस्कृति और साहित्य का विश्व कोश माना जाता है, जिसमें शताब्दियों के प्रवह-मान भारतीय विद्या का सार उपन्यस्त है। इसमें पुराणों में वर्णित विषयों के अतिरिक्त अनेक शास्त्रीय विषयों का भी सार-संग्रह किया गया है। इस पुराण का विभाजन अध्यायों में किया गया है, जिनकी संख्या ३८३ है और ११४५७ श्लोक हैं। इसके आरम्भ में विष्णु के मत्स्य, कूर्म तथा वराह अवतारों का वर्णन कर रामायण के प्रत्येक काण्ड की कथा का प थक्-प थक् अध्यायों में वर्णन किया गया है। तदनन्तर श्रीकृष्ण के वंश का वर्णन किया गया है, जिसका नाम हरिवंश है। इसमें महाभारत के सभी पर्वों की कथा स्वतन्त्र अध्यायों में दी गयी है, बाद में स ष्टि का वर्णन किया गया है। इसमें अनेक व्रतों एवं उपवासों का भी विवरण प्रस्तुत किया गया है तथा भगवान् के अवतारों एवं उनकी प्रतिमाओं के लक्षण उल्लिखित हैं। शिवलिंग, सूर्य प्रभ ति प्रतिमाओं के स्वरूप का वर्णन हुआ है तथा अनेक प्रकार की पूजाओं एवं दीक्षाओं का उल्लेख है। इसमें गंगा, काशी, गया, प्रयाग तथा नर्मदा के माहात्म्य वर्णित हैं तथा राजा के धर्म एवं व्रत, दान आदि का भी वर्णन है। अग्निपुराण में स्त्री पुरुष के शारीरिक लक्षणों एवं सामुद्रिक शास्त्र का वर्णन तथा रत्नों के भी लक्षण दिये गये हैं। इनमें चारों वेद, धनुर्वेद, आयुर्वेद, व्याकरण, दिव्यपरीक्षा तथा नाना प्रकार के अस्त्रों की शान्ति के उपाय वर्णित हैं। स ष्टि की उत्पत्ति, स्वायंभुवमनु, काश्यप, वंशवर्णन तथा विष्णु आदि देवताओं की पूजा का विधान, कर्मकाण्ड के विविध विधान, देवालयों के निर्माण का भी, अत्यन्त विस्तार के साथ वर्णन हुआ है। इनके अतिरिक्त भारतवर्ष का वर्णन, तांत्रिक उपासना, युद्ध विद्या, श्राद्ध का विधान, ज्योतिषशास्त्र का निरूपण, वर्णाश्रमधर्म, विवाह संस्कार, शौचाशौच आचार, वानप्रस्थ, पतिधर्म तथा नाना प्रकार के पाप एवं उनके प्रायश्चित्त के उपायों का इसमें निरूपण है। कोश, योग विद्या, ब्रह्मविद्या, श्राद्ध का विधान, ज्योतिषशास्त्र का निरूपण है। कोश, योग विद्या, ब्रह्मविद्या, गीता का सार,

अश्वायुर्वेद, गजायुर्वेद, व क्षायुर्वेद, गोचिकित्सा, यात्रा, शकुन का वर्णन, दान की महिमा, दण्डनीति, धनुर्विद्या, दायभाग तथा लोक-शिक्षण से सम्बद्ध अनेकविध विद्याओं को इसमें स्थान दिया गया है। अनेक विद्याओं का सार प्रस्तुत करने के कारण विण्टरनित्स ने इसे भारतीय विद्या का महाकोश कहा है। इसके अन्त में कहा गया है कि अग्निपुराण में समस्त विद्याएं प्रदर्शित की गयी हैं।

इसके ३३७ से ३४७ अध्यायों तक काव्यशास्त्र से सम्बद्ध विभिन्न विषयों का सुन्दर विवेचन है। प्रारम्भ में काव्य के लक्षण, उसके भेद, गद्यकाव्य एवं उसके मेदोपभेद तथा महाकाव्य का विवेचन है। इसमें ध्वनि, वर्ण, पद वाक्य को वाङ्मय कहा गया है और काव्य शास्त्र तथा इतिहास तीनों का समावेश वाङ्मय में किया गया है। काव्य शास्त्रीय विषयों में नाटक, रीति, व त्ति, शब्दालंकार, अर्थालंकार तथा रस का अत्यन्त विस्तार के साथ वर्णन हुआ है। इसमें छन्दों का भी विवेचन है। श ंगारादि रसों का निरूपण कर उसके सभी अंगों-विभाव, अनुभाव, संचारी एवं स्थायी-का विवेचन किया गया है और नायक-नायिका-भेद भी वर्णित है। अग्निपुराण के काव्यशास्त्रीय विषयों के निरूपण में दण्डीकृत काव्यादर्श और भोज के ग्रन्थों का बहुत बड़ा प्रभाव है। इसमें बताया गया है कि ब्रह्मा का आदिम विकार अहंकार है, जिससे अभिमान की उत्पत्ति होती है और उससे रति उत्पन्न होती है जो संचारी आदि भावों से परिपुष्ट होकर श ंगाररस का रूप धारण करती है। श ंगार से हास्य, रौद्र से करुण, वीर से अद्‌भुत और वीभत्स से भयानक रस उत्पन्न होते हैं। इसमें रीति के चार भेदों-पांचाली, गौड़ी वैदर्भी एवं लाटता या लाटी का वर्णन है। ३४१ से ३४२ वे अध्यायों में न त्य एवं अभिनय का वर्णन है और ३४३वें अध्याय में अर्थालंकार तथा ३४५वें मे शब्दार्थालंकार निरूपित हैं। ३४६ तथा ३४७ वें अध्यायों में काव्यगुणों और काव्यदोषों का वर्णन है। इसमें गुण के तीन भेद किये गये हैं-शब्दगुण, अर्थगुण और शब्दार्थगुण। गुण के सात, अर्थगुण के ६ एवं शब्दार्थगुण के ६ भेद उक्त हैं। अनेक प्राचीन ग्रन्थों का सार ग्रहण करने के कारण विद्वानों ने अग्निपुराण का समय नवम शताब्दी माना है। इसका मूल नाम वह्निपुराण था।

भविष्य पुराण

भविष्य की घटनाओं वर्णन होने के कारण इसका नाम भविष्य पुराण है। ब हन्नारदीयपुराण में इसकी जो विषयय-सूची दी गयी है, उसके अनुसार इसमें पांच पर्व हैं-ब्रह्मपर्व, विष्णुपर्व, शिवपर्व, सूर्यपर्व तथा प्रतिसर्ग पर्व। भविष्यपुराण में कुल १४ हजार श्लोक हैं। नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित संस्करण में दो खण्ड हैं-पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध और उनमें क्रमशः ४१ एवं १७१ अध्याय हैं। संप्रति इसकी जो प्रतियां उपलब्ध हैं, उनमें नारदीयपुराण की विषय-सूची की पुष्टि नहीं होती। भविष्य-कथन में कलि के विभिन्न राजाओं से लेकर रानी विक्टोरिया तक का इसमें वर्णन है। इसके प्रतिसर्गपर्व की अनेक कथाओं की पंडितों ने अविश्वसनीय माना है और इसका भविष्यकथन भी आज की घटनाओं से मेल नहीं खाता, अतः विद्वान् इसे प्रक्षेप मानने को विवश हैं।

भविष्य में होने वाली घटनाओं का वर्णन होने के कारण इसमें समय-समय पर उत्पन्न विद्वानों ने अनेक समय की घटनाओं को जोड़ दिया है, जिससे सारा पुराण गड़बड़ का भंडार हो गया है। इसमें अंगरेजों के लिये 'इंग्रेज' शब्द का प्रयोग हुआ है। इस पुराण का मूल रूप समय-समय पर परिवर्तित होता गया है और बेडौल ठूसठास के कारण यह अज्ञेय होता चला गया है। आफ्रेट महोदय ने १६०३ ई० में अपने एक लेख में इसके लिये 'साहित्यिक धोखेबाजी' शब्द का प्रयोग किया था। वैंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित संस्करण में इतनी नवीन बातें आ गयी हैं कि सहसा उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता। पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र को भविष्यपुराण की जो चार प्रतियां प्राप्त हुई थीं, उनमें परस्पर भिन्नता थी। उनका कहना था

कि आज कल जो भविष्यपुराण मिलता है, उसमें चारों प्रतियों के विषयों का मिश्रण है।

इस पुराण का प्रारम्भ राजा शतानीक के प्रश्न से होता है जिसका उत्तर सुमन्त मुनि देते हैं। इसके वर्ण्य-विषयों के युगों की संख्या और धर्म, चतुर्वर्णों की उत्पत्ति, संस्कार एवं उनके नाम, ब्राह्मणों की प्रशंसा तथा पुराणों की प्रशंसा हैं। इसमें वेदाध्ययन की विधि, संस्कारों की विधि, ब्रह्मचारी के धर्म, स्त्री के लक्षण, चारों वर्णों की वैवाहिक व्यवस्था, विवाह के आठ भेद, पुत्री के धन लेने का निषेध, पतिव्रता का आचरण एवं शास्त्र पर विचार, उत्तम देश में निवास करने योग्य स्थान पर विचार, ग हस्थ का व्यवहार, मन्दिर बनाने एवं ब्रह्मा जी की पूजा का फल आदि विषयों का वर्णन है। उपर्युक्त सभी विषय प्रथम कल्प में वर्णित हैं। इसके द्वितीय कल्प में च्यवन ऋषि की कथा तथा पुष्प-द्वितीया की विधि का कथन है। इसमें सूर्य-पूजा का फल आदि विषयों का वर्णन हुआ है और सर्पों की विविध जातियों के लक्षण का वर्णन कर मन्त्रौषधि के प्रयोग की विधि बतायी गयी है। इसमें बताया जाता है कि श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब को जब कुष्ठ रोग हो गया तो उनकी चिकित्सा के लिये गरुड शाकद्वीप से शाकद्वीपी ब्राह्मणों को ले आये, जिन्होंने सूर्योपासना के द्वारा उन्हें रोग-मुक्त कर दिया।

धार्मिक जीवन के विविध विधानों, स ष्टि-क्रम की चर्चा तथा भौगोलिक विषयों का भी वर्णन इस पुराण में हुआ है। सूर्योपासना के वर्णन में ही सुप्रसिद्ध 'आदित्य ह्रदयस्तोत्र' का समावेश है। आधुनिक राजाओं का वर्णन करते समय इसमें मुस्लिम शासन की स्थापना, प थ्वीराज की गाथा तथा आल्हा ऊदल की कहानी कही गयी है। शाकद्वीपी मग ब्राह्मणों की उत्पत्ति का वर्णन ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। इस पुराण का उल्लेख अबलेरूनी के ग्रन्थ में होने के कारण विद्वानों ने इसका समय दसवीं शती माना है।

ब्रह्मवैवर्त्त पुराण

ब्रह्म के विवर्त्त के प्रसंग के कारण इस पुराण की संज्ञा ब्रह्मवैवर्त्त है। यह पुराण चार खण्डों में विभक्त है-ब्रह्म खण्ड, प्रकृति खण्ड, गणेश खण्ड तथा कृष्ण-जन्म-खण्ड-और श्लोकों की संख्या अट्ठारह हजार है। यह वैष्णव पुराण है जिसका प्रतिपाद्य विषय श्रीकृष्ण के चरित्र का विस्तारपूर्वक वर्णन कर वैष्णव तथ्यों का प्रकाशन है। इसमें राधा कृष्ण की पत्नी एवं स ष्टि की आधारभूत शक्ति के रूप में प्रदर्शित की गयी हैं। नारदपुराण के अनुसार इसमें श्रीकृष्ण द्वारा ब्रह्म तत्त्व का प्रतिपादन होने के कारण इसकी अभिधा ब्रह्मवैवर्त्त पुराण है।

अष्टादश पुराण से यह पुराण इस अर्थ में भिन्न है कि अन्य पुराणों में जहाँ पांच तत्त्वों की प्रधानता होती है, वहां इसमें स ष्टि की उत्पत्ति का अल्प मात्रा में वर्णन कर राधा-कृष्ण की ललित-लीला का विस्तारपूर्वक वर्णन करते हुए तत्वम्बन्धी साम्प्रदायिक साधानाएं एवं उपासनाएं प्रस्तुत की गयी हैं। इसके कथानक की नव्यता की सूचना स्वयं इसके लेखक ने दी है। "समस्त पुराणों और उप-पुराणों तथा वेदों के भ्रम का भंजन करने वाला, हरि भक्ति का उत्पादक, समस्त तात्त्विक ज्ञान की व द्धि करने वाला कामियों को कामना की पूर्ति करने वाला और मोक्षभिलाषियों को मोक्ष दिलाने वाला, वैष्णव जनों की भगवत् भक्ति का मार्ग-दर्शक यह ब्रह्मवैवर्त्त पुराण है। इस प्रकार इसे कल्पव क्ष समझना चाहिये।"

इसके बह्म खण्ड में श्रीकृष्ण द्वारा स ष्टि की रचना करने तथा परब्रह्म का निरूपण है। इस खण्ड में कुल तीस अध्याय हैं। इस खण्ड में परब्रह्म परमात्मा को स ष्टि का बीज तत्व माना गया है और वे एकमात्र गोलोकवासी श्रीकृष्ण ही हैं। इसमें परब्रह्म को शिव, शक्ति, महाविष्णु, दुर्गा या श्रीकृष्ण से अभिन्न कहा गया है। इसके सोलहवें अध्याय में आयुर्वेद का वर्णन है। प्रकृति खण्ड में देवियों का चरित वर्णित है तथा देवताओं की उत्पत्ति एवं विश्व के निर्माण की उपक्रियायें कथित हैं। इसमें प्रकृति का वर्णन दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, सावित्री एवं राधा के रूप में किया गया है। अन्य वर्ण्य विषयों में तुलसी-पूजन-विधि, रामचरित तथा द्रौपदी के

पूर्वजन्म का व त्तान्त, सावित्री की कथा, छियासी प्रकार के नरककुण्डों का वर्णन, लक्ष्मी की कथा, भगवती स्वाहा, स्वधा, देवी षष्ठि आदि की कथा तथा पूजन विधि, महादेव द्वारा राधा के प्रादुर्भाव एवं महत्व का वर्णन, श्रीराधा का ध्यान एवं षोडशोपचार पूजन-विधि, दुर्गाजी के सोलह नामों की व्याख्या, दुर्गाशन स्तोत्र तथा प्रकृति कवचादि का वर्णन है। गंगा, लक्ष्मी, सरस्वती आदि देवियों का उपाख्यान तथा भक्तों के लक्षणों का वर्णन इसी खण्ड मं है। इसमें काल-कमलेश्वर के गुणों का निरूपण एवं प थ्वी की कथा दी गयी है और भूमि हरण के पाप एवं भूमि-दान के पुण्य का उल्लेख है। इसी खण्ड में गंगोपाख्यान के अन्तर्गत गंगा-स्तोत्र का वर्णन हुआ है।

गणेश खण्ड में गणेश के जन्म, कर्म तथा चरित का विशद वर्णन है और उन्हें कृष्णावतार के रूप में दिखाया गया है। श्रीकृष्ण खण्ड में श्रीकृष्ण की सर्वांगपूर्ण गाथा प्रसतुत की गयी है और राधा-कृष्ण के विरह का विवरस्त त वर्णन है।

ब्रह्मवैवर्त्त पुराण स्तोत्र और कवचों का विशाल संग्रह ग्रन्थ है। इसमें गणेश सम्बन्धी चार, शिवविषयक ६, दुर्गा सम्बन्धी ग्यारह, नारायण के दो, लक्ष्मी के ६, श्रीकृष्ण के ४१, राधा के १० एवं अन्य देवताओं के तीन स्तोत्र हैं। इसके अन्य प्रतिपाद्य विषयों की सूची इस प्रकार है-भगवद्भक्ति का प्रतिपादन, योग का वर्णन, सदाचार, वैष्णव तथा भक्ति की महिमा, नर-नारी के धर्म, अतिथि-सेवा का महत्त्व, गुरुमहिमा, माता-पिता की महत्ता, रोग-विज्ञान, स्वास्थ्य के नियम तथा औषधों की उपादेयता, व द्धत्व के न आने के साधन, आयुर्वेद के सोलह आचार्यों एवं उनके ग्रन्थों का विवरण, भक्ष्याभक्ष्य, शकुन, अपशकुन तथा पाप-पुण्य का उल्लेख।

इस पुराण के प्रमुख चरित्र श्रीकृष्ण हैं और राधा उनकी ह्लादिनी शक्ति के रूप में वर्णित है। इसमें राधा-कृष्ण के विवाह का भी वर्णन है तथा कृष्ण-भक्ति सम्बन्धी जितने भी सम्प्रदाय हैं-राधावल्लभीय, गौड़ीय, वल्लभीय आदि- उन सबों के साधानात्मक रहस्यों के मूल स्त्रोत इसमें विद्यमान हैं। इसमें यह प्रतिपादित किया गया है कि प्रकृति, ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव का आविर्भाव श्रीकृष्ण से ही हुआ है। इसमें श्रीकृष्ण और राधा से उस महाविराट् पुरुष या नारायण की उत्पत्ति कही गयी है, जिनके रोम-रोम में ब्रह्माण्ड है। इस पुराण के अनुसार हरि-भक्ति और हरि-कीर्त्तन का मार्ग सार्वभौम और सार्वजनीन है। श्रीकृष्ण की भक्ति से विहीन नर महापातकी बतलाये गये हैं। इस पुराण की रचना नारायण और नारद-संवाद के रूप में की गयी है। साहित्यिक द ष्टि से इसका महत्त्व असंदिग्घ है।

लिङ्ग पुराण

यह शिवपूजा एवं लिंगोपासना के रहस्य को बतलाने वाला तथा शिव-तत्त्व का प्रतिपादक पुराण है। इसके आरम्भ में लिंग शब्द का अर्थ ओंकार किया गया है, जिसका अभिप्राय यह है कि शब्द तथा अर्थ दोनों ही ब्रह्म के विवर्त्त रूप हैं। इसमें बताया गया है कि ब्रह्म सच्चिदानन्द स्वरूप है और उसके तीन रूप-सत्ता, चेतना और आनन्द-आपस में संबद्ध हैं। सत्ता के अभाव में न तो ज्ञान की उपलब्धि हो सकती है और न ज्ञान के बिना आनन्द की ही प्राप्ति होगी। तीनों ही देश-काल की सीमा से परे एवं व्यापक हैं। ब्रह्म की माया शक्ति इन्हें सीमा में आबद्ध कर स ष्टि का निर्माण करती है। पुनः सीमाबद्ध होने पर सत्ता सामान्य तथा विशेष रूप में प्रकट होता है और सुख तथा दुःख के रूप में आनन्द की भी परिणति हो जाती है। उपर्युक्त दार्शनिक तथ्य को पौराणिक भाषा में प्रकट किया गया है।

'शिव पुराण' बतलाता है कि लिंग के चरित का कथन करने या शिवपूजा के विधान का प्रतिपादन करने के कारण इसे लिंग पुराण कहते हैं। मत्स्य-पुराण के मतानुसार भगवान शंकर ने अग्निलिंग के मध्य में स्थित होकर तथा कल्पान्तर में अग्नि को लक्षित करते हुए धर्म, अर्थ, काम और

मोक्ष इन चारों पदार्थों की उपलब्धि के लिये जिस पुराण में धर्म को आदेश दिया है, उसे ब्रह्मा ने लिंग या लैंग पुराण की संज्ञा दी है।

लिंग पुराण में कुल ग्यारह सहस्त्र श्लोक हैं और अध्यायों की संख्या १६३ है। इसके दो विभाग हैं-पूर्व तथा उत्तर। पूर्वार्द्ध में १०८ अध्याय हैं और उत्तरार्द्ध में ५२ अध्याय। शिव-पुराण में भी इसके श्लोकों की संख्या यही हो गयी है। पूर्वभाग में बताया गया है कि शिव द्वारा ही स ष्टि की रचना हुई है। इसमें वैवरवत मन्वन्तर से लेकर कृष्ण के समय तक की घटनाओं एवं राजाअें के वंशव त्त दिये गये हैं। चूँकि यह पुराण शिवतत्त्व का प्रतिपादन करता है और इसमें शिवोपासना का प्राधान्य है, अतः अनेक स्थलों पर शिव को विष्णु से महत्तर सिद्ध किया गया है। इसमें शिव के २८ अवतारों का कथन कर शैव तीर्थों एवं व्रतों का विस्त त विवेचन है। इसके उत्तर भाग में शैवतन्त्रों के अनुसार ही पशु, पाश तथा पशुपति का वर्णन है। इसमें लिंगोपासना से सम्बद्ध से कथा भी प्रस्तुत की गयी है। इसके ६२वें अध्याय में काशी का विस्तारपूर्वक वर्णन है और उसके अनेक तीर्थों का विवरण देकर काली की भौगोलिक स्थिति का परिचय दिया गया है। इसमें उत्तरार्द्ध के कई अध्याय गद्य में हैं और तेरहवें अध्याय में शिव की प्रसिद्ध अष्टमूर्तियों के वैदिक नामों के उल्लेख हैं। इसके कई भागों पर तांत्रिक प्रभाव भी परिलक्षित होता है। इसमें योग का विस्त त वर्णन कर उसमें आने वाले विघ्नों का वर्णन दिया गया है।

विघ्न-निवारण के साधनों में ध्यान, यज्ञ, तप, शास्त्र-श्रवण आदि का कथन है। इसके ६८वें अध्याय में विष्णुकृत 'शिवसहस्त्रनाम' है जिसमें शिव के वैदिक नाम भी आये हैं। लिंग-पुराण के वर्णित विषयों में दधीचि-चरित, युगधर्मविवेचन, लिंगप्रतिष्ठा, पशुपाशाभिमोक्षण, शिवव्रत, सदाचारनिरूपण, प्रायश्चित्तवर्णन, अरिष्टों का वर्णन, काशी की शोभा, अन्धकासुर का आख्यान, वाराहचरित, न सिंह-चरित, जलन्धर, की कथा तथा उसका वध, शिवसहस्त्रनाम, सती की कथा एवं रक्ष-यज्ञ-विनाश का विवरण, काम-दहन, पार्वती-विवाह, विष्णु माहात्म्य कथन, अम्बरीष की कथा, सनत्कुमार और नन्दी-संवाद, शिवमाहात्म्य, सूर्यपूजा-विधि, शिवपूजा द्वारा मुक्ति की प्राप्ति, नाना प्रकार के दान, श्राद्ध-प्रकरण, अघोर-कीर्तन, व्रजेश्वरी, महाविद्या तथा गायत्री की महिमा, अम्बक की महिमा, पुराणश्रवण का माहात्म्य आदि हैं।

लिंग पुराण का काल-निर्णय अभी तक अज्ञात है और इस सम्बन्ध में कोई सुनिश्चित मत स्थिर नही हो सका है। इसमें कल्कि और बौद्ध अवतारों के नाम हैं तथा नौवें अध्याय में योगान्तरायों का जो वर्णन है, वह 'व्यासभाष्य' से अक्षरशः मेल खाता है। 'व्यासभाष्य' का समय षष्ठशतक है। लिंग पुराण का निर्देश अल्बेरुनी ने भी किया है और 'कल्पतरु' में इसके अनेक उद्धरण हैं। इन्हीं प्रमाणों के आधार पर विद्वानों ने लिंग पुराण का समय आठवीं एवं नवीं शती के मध्य माना है।

वाराह पुराण

विष्णु भगवान् के वराह अवतार का वर्णन होने के कारण इसे वराह पुराण कहा जाता है। इसमें इस प्रकार का उल्लेख है कि विष्णु ने वराह का रूप धारण कर पाताल लोक से प थ्वी का उद्धार कर, इस पुराण का प्रवचन किया था। यह समग्रतः वैष्णव पुराण है। इसमें रामानुजीय श्री वैष्णव मत का विशद विवेचन प्रस्तुत है। इसके प्रारम्भ में सूतजी ने वराह भगवान् से इसकी कथा कहने की प्रार्थना की है। इसमें प्रश्नकर्त्ता प थ्वी है और उत्तरदाता स्वयं वराह भगवान् हैं तथा विष्णु के दशावतारों एवं अनेक आख्यानों का विवरण प्राप्त होता है। प्रत्येक तिथि से सम्बद्ध व्रतों का वर्णन करते हुए तत्सम्बन्धी अनेक आख्यान दिये गये हैं और विशिष्ट मासों की तिथियों की अनेक कथाएँ कही गयी हैं। इसमें भगवान् विष्णु की शिवकृत स्तुति तथा स्तोत्र का वर्णन है।

इस पुराण में २४ हजार श्लोक तथा २१७ अध्याय हैं; किन्तु एशियाटिक सोसाइटी (कलकत्ता) से प्रकाशित संस्करण में १०,७०० श्लोक हैं। इसके अनेक अध्यायों में केवल ग़द्य तथा पद्य का मिश्रण है। इस पुराण के दो रूप प्राप्त हैं-गौड़ीय एवं दक्षिणात्य, जिनमें पाठ-भेद के अतिरिक्त अध्यायों की संख्या में भी अन्तर है। इसमें स ष्टि तथा राजवंश-व त्तों की संक्षिप्त चर्चा है, पर पुराणोक्त विषयों की पूर्ण संगति नहीं बैठ पाती। इसमें मुख्यतः भक्तों के निमित्त स्तोत्रों तथा पूजा-विधियों का संग्रह है। वैष्णव पुराण होते हुए भी इसमें शिव तथा दुर्गा से सम्बद्ध कथाएं एवं उनकी पूजा-विधियाँ दी गयी हैं। इसमें मात -पूजा और देवियों की पूजा का वर्णन ६० से ६५ अध्याय में वर्णित है।

वाराह पुराण में गणेश की जन्म-कथा तथा गणेश-स्तोत्र का भी वर्णन है तथा श्राद्ध, प्रायश्चित, देवप्रतिमा-निर्माण-विधि आदि का कई अध्यायों में विवरणात्मक परिचय है। इसके १५२ से १६८ अध्यायों में कृष्ण-कथा एवं मथुरा-माहात्म्य का वर्णन है। मथुरा-माहात्म्य में मथुरा का भौगोलिक विवरण देकर उसकी उपयोगिता बढ़ा दी गई है। वाराह-पुराण में नचिकेता का विस्त त उपाख्यान देकर नरक और स्वर्ग का वर्णन किया है। रामानुजाचार्य का मत दिये जाने के कारण इसका समय नवम शताब्दी माना जाता है।

स्कन्द पुराण

यह सर्वाधिक विशाल पुराण है, जिसकी श्लोक संख्या ८१००० है। इस पुराण में ६ संहितायें हैं।

(१)	सनत्कुमार संहिता	३६,०००
(२)	सूत संहिता	६,०००
(३)	शंकर संहिता	३०,०००
(४)	वैष्णव संहिता	५,०००
(५)	ब्रह्म संहिता	३,०००
(६)	सौर संहिता	१,०००
		- - - - - - - - -
		८१,००० श्लोक
		- - - - - - - - -

इस पुराण का विभाजन विभिन्न खण्डों में भी किया गया है, यथा-माहेश्वरखंड, वैष्णवखण्ड, ब्रह्मखंड, काशीखंड, ध्वनिखंड, रेवाखंड, तापीखंड तथा प्रभासखंड।

इस पुराण का नामकरण शिव जी के पुत्र स्कन्द या कार्त्तिकय के नाम पर किया गया है। इसमें स्कन्द द्वारा शैव तत्त्व का प्रतिपादन कराया गया है। सम्प्रति इस पुराण के दो संस्करण प्राप्त होते हैं-प्रथम संहितात्मक एवं द्वितीय खण्डात्मक। इसमें स्कन्द द्वारा तत्पुरुषकल्प के प्रसंग में अनेक चरित, उपाख्यान एवं माहेश्वर तत्त्व का व्याख्यान किया गया है। शिवपुराण के उत्तरखण्ड में कहा गया है कि 'स्कन्दपुराण' के वक्ता स्वयं शिव हैं और श्रोता स्कन्द हैं।

(१) माहेश्वर खण्ड - इसके अन्तर्गत केदार तथा कुमारिल खण्ड नामक दो उपविभाग हैं। इसमें अनेकानेक कथाओं का विशाल संग्रह है। दोनों ही खण्डों में शिव-पार्वती के चरित्र का विस्त त विवरण प्राप्त होता है। इसके वर्णित विषय हैं-दक्ष-यज्ञ-कथा, समुन्द्र मंथन की कथा, देवेन्द्र चरित, पार्वती की कथा, विवाह एवं कुमार का जन्म, तारक-वध, पशुपति का

आख्यान, चण्डिका की कथा, नारद-समागम, कुमार-माहात्म्य, पंचतीर्थ कथा, महिषासुर का वध तथा शौणाचल में शिवोवस्थान का उपाख्यान।

ब्रह्म खण्ड - इसमें धर्मारण्यय नामक स्थान का माहात्म्य तथा महाकाल की प्रतिष्ठा और पूजन की विधि वर्णित है।

(२) काशी खण्ड - इसके उत्कल खंड में जगन्नाथ जी की कथा, उनकी पूजा का विधान एवं उनसे सम्बद्ध उपाख्यानों का संग्रह है। जगन्नाथ जी का प्राचीन इतिहास इस खण्ड का प्रमुख प्रतिपाद्य है। इसके अन्तर्गत शिव महिमा, भूमिवराह की कथा, तीर्थों की महिमा, कमला की कथा, माण्डव्याश्रम, प्रमुख तीर्थों एवं मासादि का वर्णन हुआ है। इनके अतिरिक्त इसके वर्णित विषयों में पंचाक्षर-महिमा, गोकर्ण-माहात्म्य, शिवरात्रि महिमा आदि आते हैं। काशीखण्ड का भी वर्णन इसी के अन्तर्गत है।

(३) नागर खण्ड - इसके वर्ण्यविषयों में लिंगोत्पत्ति, हरिश्चन्द्र-कथा, विश्वामित्र का उपाख्यान, त्रिशंकु की कथा, दान तथा द्वादशादित्य और काशी का माहात्म्य आदि हैं।

(४) प्रभास खण्ड - इस खण्ड में प्रभासक्षेत्र का विस्त त विवरण प्राप्त होता है। इसमें द्वारिका का भूगोल दिया हुआ है। इसमें योगेश, विश्वेश, सिद्धेश्वरादि कथा, अग्नितीर्थ से लेकर तीर्थवास तक का उपाख्यान, द्वारिका-पुण्य-कीर्तन का वर्णन है। प्रभास खण्ड में ओंकार-प्रशंसा लोमहर्षक-मुनिगण-संवाद और पुराण एवं उपपुराण के लक्षण के अतिरिक्त दान-विधि का वर्णन है।

(५) रेवा खण्ड - इसमें आदिकल्प, अवतार-वर्णन, नर्मदा या रेवा नदी की महिमा एवं उसके तीरस्थ तीर्थों का विस्त त विवरण है।

(६) अवन्ति खण्ड - इसमें उज्जैन या अवन्ति में विद्यमान शिवलिंगों के उद्‌भव एवं माहात्म्य का वर्णन है। महाकालेश्वर का विस्त त वर्णन इस खण्ड में हुआ है।

(७) तापी खण्ड - इसमें नर्मदा की सहायक नदी तापी के किनारे पर स्थित तीर्थों का वर्णन है। इसे नागर खण्ड भी कहते हैं।

यह शैवतत्त्व एवं शैवमत का प्रतिपादक पुराण है। इसमें दो गीताएं प्राप्त होती हैं-ब्रह्मगीता (१२ अध्यायों में) तथा सूतगीता (आठ अध्यायों में)। इनके विषय आध्यात्मिक हैं और इनमें दिखाया गया है कि शिव के प्रसाद से ही सभी कर्मों की सिद्धि संभव है।

जगन्नाथजी का वर्णन होने के कारण पाश्चात्य विद्वानों ने इसका समय १३वीं शताब्दी माना था, किन्तु डॉ० हरप्रसाद शास्त्री को नेपाल के पुस्तकालय में ७वीं शती का इसका हस्तलेख मिला है, जिसके आधार पर इसका समय सातवीं शती से पूर्व सिद्ध होता है। इस पुराण में विभिन्न स्थानों का भौगोलिक चित्रण अत्यन्त-विस्तार के साथ हुआ है तथा वेद-विषयक विपुल सामग्री का विवेचन है। इसके काशी खण्ड में वहाँ के सभी देवताओं, तथा शिवलिंग का माहात्म्य वर्णित है। काशी का प्राचीन भौगोलिक विवरण प्रस्तुत करने के कारण इस अंश की उपयोगिता बढ़ गयी है। यह पुराण शिव की उपासना का विश्वकोश माना जाता है। यह शिवोपासकों के लिए अत्यन्त श्रद्धास्पद एवं वर्णाश्रम धर्म की व्यवस्था को मानने वालों के लिए अत्यन्त महनीय है।

इसके रेवाखण्ड के अन्तर्गत सत्यनारायणव्रत-कथा का वर्णन था, पर सम्प्रति वह कथा वहां उपलब्ध नहीं होती। इस पुराण से अनेक पुस्तकें निकली हैं-जैसे, सह्याद्रिखण्ड, अर्बुदाचलखण्ड, काश्मीरखण्ड, कैलाशखण्ड, पुष्करखण्ड, बदरिकाखण्ड, हिमवत्‌खण्ड, अधिमासमाहात्म्य, अम्बिकामाहात्म्य, अयोध्यामाहात्म्य, अरुन्धतीव्रत कथा, वैशाखमाहात्म्य, कार्त्तिक माहात्म्य आदि।

वामन पुराण

विष्णु भगवान् के वामनावतार से संबद्ध होने के कारण इसका नाम वामन पुराण है। इसमें ९५ अध्याय एवं दस हजार श्लोक हैं। मत्स्य-पुराण के अनुसार जिसमें त्रिविक्रम (वामन) भगवान् की गाथा ब्रह्मा द्वारा कीर्त्तित है और उसमें वामन द्वारा तीन पगों में ब्रह्माण्ड को नापने का वर्णन है, उसे वामन पुराण कहते हैं। इस पुराण में चार संहितायें-माहेश्वर संहिता, भागवती संहिता, सौरी संहिता तथा गाणेश्वरी संहिता-हैं और पूर्व तथा उत्तर के नाम से दो विभाग किये गये हैं। इसके आरम्भ में वामनावतार की कथा वर्णित है तथा बाद के कई अध्यायों मे विष्णु के अवतारों का उल्लेख है। यह विष्णुपरक पुराण है। पर इसमें साम्प्रदायिक संकीर्णता परिलक्षित नहीं होती। इसमें विष्णु की चरितावली के अतिरिक्त शिव-माहात्म्य, शैवतीर्थ, उमा-शिव-विवाह, गणेश एवं कार्त्तिकेय के जन्म की कथा आदि बातों का समावेश है तथा 'दुर्गासप्तशती' मं वर्णित कथा का भी संक्षिप्त विवरण प्राप्त होता है। इसमें 'मुर दानव' के आख्यान का वर्णन कर विष्णु भगवान् के 'मुरारि' नामकरण का रहस्योद्घाटन हुआ है। भगवान शंकर द्वारा अंधकासुर के वध की कथा भी यहाँ वर्णित है। इस पुराण में वर्णित शिव-पार्वती चरित का कुमारसंभव के साथ आश्चर्यजनक साम्य दिखायी पड़ता है।

कूर्म पुराण

इस पुराण का प्रारम्भ भगवान् कूर्म की प्रशंसा से होता है। प्राचीन काल में जब देवता और दानवों ने मिलकर समुद्र का मथंन किया तो भगवान् विष्णु ने कूर्म का रूप ग्रहण कर मंदराचल को अपने प ष्ठ पर धारण किया। इस पुराण में चार संहितायें रही होंगी-ब्राह्मी संहिता, भागवती संहिता, गौरी संहिता एवं वैष्णवी संहिता-पर सम्प्रति एक भाग ब्राह्मी संहिता ही प्राप्त होती है और उपलब्ध प्रति में केवल छह हजार श्लोक हैं। भावगत एवं मत्स्य पुराण के अनुसार इमें अट्ठारह हजार श्लोक थे, पर अधुना वे अनुपलब्ध हैं। इसमें शिव और विष्णु के अतिरिक्त शक्ति-पूजा की महत्ता पर भी बल दिया गया है ओर शक्तिसहस्त्रनाम भी दिया गया है। इसके दो विभाग हैं-पूर्व और उत्तर। पूर्वभाग में ५३ एवं उत्तर भाग में ४६ अध्याय हैं। इस पुराण में 'पुराण चलक्षणम्' का पूर्णतः समावेश है तथा स ष्टि, वंशानुक्रम एवं विष्णु के कई अवतारों का आख्यान दिया गया है। इसमें काशी और प्रयाग के माहात्म्य का भी वर्णन है। ब्रह्मा, विष्णु और महेश में एकत्व-स्थापना के कारण इस पुराण में साम्प्रदायिक संकीर्णता की गंध नहीं आती। इसमें भगवान् विष्णु शिव के रूप में और लक्ष्मी गौरी की प्रतिकृति के रूप में वर्णित हैं और शिव को देवाधिदेव के रूप में प्रस्तुत कर उन्हीं की कृपा से श्रीकृष्ण को जाम्बवती की प्राप्ति का उल्लेख है। इसमें गीता के आधार पर 'व्यासगीता' का समावेश किया गया है, जिसमें पवित्र कर्मों एवं अनुष्ठानों के कारण भागवत् साक्षात्कार की बात कही गयी है। 'व्यास-गीता' के एकादश अध्याय में पाशुपत योग का विस्त त वर्णन है तथा उसमें वर्णाश्रमधर्म एवं सदाचार का भी कथन किया गया है। इसके पूर्वभाग में बारहवें अध्याय में महेश्वर की शक्ति के चार विभाग-शान्ति, विद्या, प्रतिष्ठा तथा निव त्ति-प्रकार मानकर उसका वैशिष्ट्य प्रदर्शित किया गया है। पाशुपत मत की प्रधानता के कारण विद्वानों ने इसे सप्तम शती की रचना माना है। कूर्मपुराण की सूची इस प्रकार है-पुराण का उपक्रम, लक्ष्मी-इंद्रद्युम्न-संवाद, कूर्म तथा महर्षियों की वार्त्ता, वर्णाश्रम-सम्बन्धी आचार का विवरण, जगत् की उत्पत्ति का कथन, कालसंख्या-निरुपण, प्रलय के अन्त में भगवान् की वंदना, स ष्टि का संक्षिप्त वर्णन, शंकर-चरित्र, पार्वती सहस्त्रनाम, योगनिरूपण, भ गुवंश वर्णन, स्वायम्भुवमनु एवं देवताओं की उत्पत्ति, दक्ष-यज्ञ-विध्वंस, दक्ष-स ष्टि-कथन, कश्यप-वंशवर्णन, श्रीकृष्णचरित, मार्कण्डेय-कृष्ण-संवाद, व्यास-पाण्डव-संवाद, युगधर्म-वर्णन, व्यास-जैमिनि-कथा, काशी एवं प्रयाग का माहात्म्य, तीनों लोकों का वर्णन और वैदिक शाखा का निरूपण। उत्तरभाबग ईश्वरीय एवं व्यासगीता का वर्णन,

नाना प्रकार के तीर्थों का वर्णन एवं उनके माहात्म्य का कथन, प्रतिसर्ग या प्रलय का वर्णन। उपर्युक्त सभी विषय ब्राह्मी संहिता में वर्णित हैं। इसके कई अध्यायों में अनेक प्रकार के पापों के प्रायश्चित्त का भी विधान है ओर उनसे शुद्धि की चर्चा की गयी है। इसके उत्तरार्द्ध में सांख्ययोग का वर्णन कर मनुष्यों के आचार-शास्त्र का प्रतिपादन किया गया है।

मत्स्य पुराण

इस पुराण का प्रारम्भ मनु तथा विष्णु के संवाद से होता है। 'श्रीमद्भागवत' 'ब्रह्मवैवर्त्तपुराण' तथा 'रेवामाहात्म्य' में इसकी श्लोक संख्या १५,००० दी गयी है। इसमें २६१ अध्याय हैं। आनन्दाश्रम पूना से प्रकाशित इस पुराण के संस्करण में कुल १४,००० हजार श्लोक प्राप्त होते हैं। इस पुराण का आरम्भ प्रलयकाल की, उस घटना के साथ होता है, जब विष्णु ने एक मत्स्य का रूप धारण कर मनु की रक्षा की थी तथा नौकारूढ़ मनु को बचा कर उनके साथ संवाद किया था। इस पुराण के प्रारम्भ में आदि स ष्टि, देवस ष्टि, सूर्यवंश, पित वंश का वर्णन है और श्राद्ध-विषयक सपिण्डीकरण की विधियां बतलायी गई हैं। इसके तेरहवें अध्याय में वैराज पित वंश का सविस्तार वर्णन है तथा तेरहवें एवं चौदहवें अध्यायों में अग्निष्वात और बर्हिपत् पितरों का वर्णन है। ययांति का उपाख्यान तथा शर्मिष्ठा और देवयानी के प्रसंगों का भी इसमें समावेश है। आगे के अध्यायों में यदुवंशके वर्णनक्रम में भगवान् श्रीकृष्ण की कथा आयी है। तत्पश्चात् अनेक व्रतों का विवरण दिया गया है। हिमालय तथा उसके पार्श्ववर्त्ती विविध आश्रमों का वर्णन करने के पश्चात् इसमें त्रिपुरासुर, त्रिपुरनिर्माण एवं त्रिपुरदाह का विवरण प्रस्तुत किया गया है। इसमें तारकासुर प्रभ ति अनेकानेक राक्षसों के वध का वर्णन है तथा देवासुरसंग्राम का भी प्रसंग आया है। अविमुक्त वाराणसी क्षेत्र का वर्णन करने के पश्चात् इसमें भ गु, अंगिरा, अत्रि, विश्वामित्र, कश्यप, वसिष्ठ, पराशर, अगत्स्य आदि के वंशों के विवरण प्राप्त होते हैं। सावित्री सत्यवान् की प्रसिद्ध कथा का भी इसमें उल्लेख प्राप्त होता है। इसके अन्य अध्यायों में तीर्थयात्रा, प थुचरित, भुवनकोश, दानमहिमा, स्कन्दचरित, तीर्थमाहात्म्य, राजधर्म श्राद्ध तथा गोत्रों का वर्णन है और शिवजी के मुख से काशी की महिमा का कथन कर विभिन्न देवताओं की प्रतिमा के निर्माण की विधि बतलायी गयी है। नर्मदा नदी का विस्त त वर्णन १८४ से १६४ अध्यायों में किया गया है तथा ५३ वें अध्याय में सभी पुराणों के वर्ण्य-विषय का विस्त त विवेचन है। प्रतिमाशास्त्र का इस पुराण में वैज्ञानिक विवेचन प्राप्त होता है और प्रतिमापीठ की स्थापना होती है। इस विषय का वर्णन २५७ अध्याय से २७० वें अध्याय तक है। राजधर्म का वर्णन इसकी अपनी निधि है, जिसमें देव, पुरुषकार, साम, दाम, दण्ड, भेद, दुर्ग, यात्रा, सहाय-सम्पत्ति एवं तुलादान आदि विषय वर्णित हैं। श्री हाजरा के अनुसार इस पुराण का समय त तीय शती का अंतिम चरण एवं चतुर्थशती का प्रारम्भिक काल है। पार्जिटर ने इसका समय द्वितीय शताब्दी का अन्तिम भाग स्वीकार किया है। डॉ० पी० वी० काणे के मत से मत्स्यपुराण का समय छठी शताब्दी के बाद का नहीं हो सकता।

गरुड पुराण

विष्णु के वाहन गरुड के नाम पर इस पुराण का नामकरण हुआ है। इसमें विष्णु द्वारा गरुड को विश्व की स ष्टि का कथन किया गया है। यह वैष्णव पुराण है। यह पुराण पूर्व एवं उत्तर दो खण्डों में विभक्त है और उत्तर खण्ड का नाम प्रेतखण्ड भी है। इस खण्ड में म त्यु के अनन्तर प्राणी की गति का वर्णन होने के कारण हिन्दू लोग श्राद्ध के समय इसका श्रवण करते हैं। सभी आवश्यक विषयों का समावेश होने के कारण इसे भी अग्निपुराण की भाँति पौराणिक विश्वकोश कहा जाता है। इसके पूर्व खण्ड में २२६ एवं उत्तर खण्ड में ३५ अध्याय हैं और श्लोकों की संख्या १८ हजार है। 'श्रीमद्भागवत्' तथा 'रेवा माहात्म्य; के अनुसार यह संख्या

१६ हजार है। वैष्णव पुराण होने के कारण इसका मुख्यध्यान विष्णु पूजा, वैष्णवव्रत, प्रायश्चित तथा तीर्थों के माहात्म्य-वर्णन पर केन्द्रित रहा है। इसमं पुराण-विषयक सभी तथ्यों का समावेश है और शक्ति-पूजा के अतिरिक्त पंचदेवोपासना (विष्णु, दुर्गा, शिव, सूर्य तथा गणेश) की विधि का उल्लेख है। इसमें 'रामायण', 'महाभारत' तथा 'हरिवंश' की विषय-सूची प्रस्तुत की गई है और स ष्टि-क्रम, ज्योतिष, शकुन-विचार, सामुद्रिकशास्त्र, आयुर्वेद, छन्द, व्याकरण, रत्नपरीक्षा एवं नीति के सम्बन्ध में विचार किया गया है। इसमें याज्ञवल्क्य धर्मशास्त्र के एक बड़े खण्ड का समावेश है और पशु-चिकित्सा की विधि तथा नाना प्रकार के रोगों को दूर करने का उपाय बतलाया गया है और तत्सम्बन्धी औषधियां भी दी गई हैं। इसमें ६ अध्यायों में छन्दशास्त्र का विवेचन है और सम्पूर्ण गीता का सारांश एक अध्याय में प्रस्तुत किया गया है। इसके १०८ से ११५ अध्याय तक राजनीति का वर्णन है और एक अध्याय में सांख्ययोग का विवेचन है। इसके १४४वें अध्याय में कृष्णलीला का वर्णन है और आचारखण्ड के अन्तर्गत राधा के अतिरिक्त कृष्ण की आठ पत्नियों का विवरण दिया गया है। इसके १०७वें अध्याय में ३८१ श्लोकों में पराशर-स्म ति का सारांश दिया गया है और याज्ञवल्क्य स्म ति में अनेक वचन कतिपय पाठान्तर के साथ प्रस्तुत हुए हैं। इसमें यह भी दिया गया है कि पक्षिराज गरुड का जन्म कैसे हुआ। सूर्य आदि अनेक ग्रहों का वर्णन है तथा अष्टांग योग का वर्णन भी इसी खण्ड में आता है। उत्तरखण्ड या प्रेतकल्प में गरुड तथा विष्णु के संवाद के माध्यम से जीव के गर्भावस्था में आने से लेकर म त्यु के पश्चात् होने वाले श्राद्ध एवं दान की विधियों विषयों का वर्णन है। इनके अतिरिक्त अनेक प्रकार की म त्यु तथा आयु एवं म त्यु के उपरांत होने वाली प्राणी की विविध गतियों का निरूपण है। इस खण्ड के अन्त में मुक्ति के साधन तथा गरुड पुराण के श्रवण का फल कथित है। इसमें गया का माहात्म्य-वर्णन कर इसके श्राद्ध का विशेष महत्त्व प्रदर्शित किया गया है। इस पुराण का समय नवमशती के लगभग माना गया है। डॉ० हाजरा इसका उद्भव स्थान मिथिला मानते हैं।

इस पुराण में वाग्भट-रचित 'अष्टांगहृदसंहिता' की सामग्री संकलित की गयी है और आयुर्वेद विषयक तथ्यों का संकलन उसी के आधार पर किया गया है। वाग्भट का समय अष्टम या नवमशती है, अतः गरुडपुराण का लेखनकाल भी यही है। अल्बेरुनी ने इस पुराण का उल्लेख किया है तथा इसका उल्लेख वल्लालसेनकृत 'दानसागर' में हुआ है, जहाँ इसे 'तार्क्ष्यपुराण' कहा गया है। 'युक्तिकल्पतरु' में इस पुराण के उद्धरण प्राप्त होते हैं अतः यह एक हजार ईस्वी की परवती रचना नहीं है।

ब्रह्माण्ड पुराण

'नारदपुराण' तथा 'मत्स्य पुराण' के अनुसार इसमें १०८ अध्याय एवं बारह हजार श्लोक हैं। यह पुराण चार पादों में विभक्त- प्रक्रियापाद, अनुषंगपाद, उपोद्घातपाद तथा उपसंहारपाद। स ष्टि के विवरण से ही इस पुराण का प्रारम्भ होता है, तदनन्तर योग का वर्णन है। 'मत्स्य पुराण' के अनुसार ब्रह्माण्ड के महत्त्व को प्रदर्शित करने के लिए ब्रह्माा ने जिस पुराण का उपदेश दिया था, उसमें भविष्य एवं कल्पों का व त्तान्त विस्तारपूर्वक वर्णित है और उसे 'ब्रह्माण्ड पुराण' के नाम से अभिहित किया जाता है। समस्त ब्रह्माण्ड का वर्णन होने के कारण इसे ब्रह्माण्ड पुराण की संज्ञा प्राप्त है। समस्त विश्व का सांगोपांग वर्णन ही इस पुराण का प्रतिपाद्य है। इसमें अरिष्ट-लक्षण, ब्रह्मा का उद्भव, कुमार का जन्म, पर्वत तथा सरिताओं का विवरण, नवद्वीपों का वर्णन ऋषियों का वंश-वर्णन तथा मन्वन्तर एवं स्वायम्भवसर्ग का वर्णन इसके प्रमुख विषयों में से है। परशुराम और सहस्त्रार्जुन की कथा, समर-चरित्र तथा विविध राजवंशों की गाथा का इसमें वर्णन है और अन्त में प्रलय और स ष्टि का विवरण प्रस्तुत कर पुराण की समाप्ति हुई हैं

इस समय बम्बई वेंकटेश्वर प्रैस के प्रकाशित ब्रह्माण्ड पुराण के संस्करण में दो ही पाद हैं-प्रक्रियापाद तथा उपसंहारपाद। पार्जिटर एवं विण्टरनित्स दोनों ही इसे वायु पुराण का प्राचीन रूप स्वीकार करते हैं। नारद पुराण में कहा गया है कि इस पुराण का उपदेश वायु ने व्यास जी को दिया था। इसके ३३ से लेकर ५८ अध्याय तक ब्रह्माण्ड का विस्त त भौगोलिक विवरण प्राप्त होता है और प्रथम खण्ड में विश्व का विस्त त भूगोल वर्णित है। ६६ से ७२वें अध्याय में जम्बू द्वीप तथा उसके पर्वत एवं नदियों का विवरण है तत्पश्चात् भद्राश्व, केतुमाल, चन्द्रद्वीप, किंपुरुष वर्ष, कैलाश, शाल्मली द्वीप, कुशद्वीप, क्रौंच द्वीप, शाक द्वीप तथा पुष्कर द्वीप का सविस्तार वर्णन है। इनके अतिरिक्त ग्रहों, नक्षत्रमण्डल एवं युगों का वर्णन है तथा त तीय पाद में क्षत्रिवंश-वर्णन प्राप्त होता है। नारद पुराण के अनुसार ज्ञात होता है कि अध्यात्मरामायण में राम-कथा का नवीन ढंग से आध्यात्मिक विवरण प्राप्त होता है। ब्रह्माण्ड पुराण में कृष्ण चरित एवं कृष्ण ललित लीला का भी गान मिलता है। इसमें राजा सगर एवं भगीरथ की कथा अत्यन्त विस्तार से २१ से २७ अध्यायों मे दी गई है तथा गंगावतरण का भी उपाख्यान आया है। इसके समय के सम्बन्ध में विद्वानों का कथन है कि इसका वर्तमान रूप चार सौ ईस्वी के आसपास निर्धारित हुआ होगा। इमें 'राजधिराज' नामक राजनीतिशास्त्र-विषयक शब्द को देख कर पण्डितों ने इसका समय मौखरी राजाओं का काल या गुप्तकाल के बाद माना है। इसकी लेखन-शैली पर महाकवि कालिदास की वैदर्भी शैली का प्रभाव विद्यमान है।

शिवपुराण

शिवपुराण तथा वायुपुराण के सम्बन्ध में विद्वानों में मतैक्य नहीं है। कुछ विद्वानों के अनुसार दोनों ही पुराण अभिन्न हैं और कतिपय विद्वान् इन्हें स्वतन्त्र पुराण के रूप में मान्यता प्रदान करते हैं। कुछ विद्वान् विभिन्न पुराणों में निर्दिष्ट सूची के अनुसार शिवपुराण को चतुर्थ स्थान प्रदान करते है। पुराणों में भी इस विषय में मतैक्य नहीं है। बहुसंख्यक पुराण शिवपुराण का अस्तित्व स्वीकार कर इसे पौराणिक क्रम से चतुर्थ स्थान का अधिकारी मानते हैं जैसे 'कूर्म', 'पद्म', 'ब्रह्मवैवर्त', 'शिव', 'भागवत', 'मार्कण्डेय', 'लिंग', 'वाराह' तथा 'विष्णुपुराण'। पर, 'देवी भागवत', 'नारद' तथा 'मत्स्य' वायुपुराण को यह महत्त्व प्रदान करते हैं। श्रीमद्भागवत के बारहवें स्कन्ध के सातवें अध्याय में जो सूची प्रस्तुत की गयी है, उसमें वायुपुराण का नामोल्लेख नहीं है। नारदीयपुराण की सूची में वायुपुराण का नाम है। सम्प्रति शिव एवं वायुपुराण संज्ञक दो पुराण प्रचलित हैं, जो वर्ण्यविषय तथा आकार-प्रकार में परस्पर भिन्न हैं। शिवपुराण का प्रकाशन वेंकटेश्वर प्रेस बम्बई से सं० १९८२ में हुआ था तथा हिन्दी अनुवाद सहित इसका प्रकाशन पंडित पुस्तकालय, वाराणसी से हुआ है। वायुपुराण के भी तीन संस्करण हुए हैं-बिबिब्लओथेका इण्डिका कलक़त्ता, आनन्द संस्कृतग्रन्थावली पूना तथा गुरुमण्डल, ग्रन्थमाला कलकत्ता से।

वेंकटेश्वर प्रेस से मुद्रित शिवपुराण में सात संहितायें हैं-विद्येश्वरसंहिता, रुद्रसंहिता, शतरुद्रसंहिता, कौटिरुद्रसंहितां, उमासंहिता, कैलाससंहिता तथा वायवीय संहिता। इसकी विश्वेश्वर संहिता में २५ अध्याय हैं तथा रुद्रसंहिता में १८७ अध्याय। इस संहिता के पांच खण्ड हैं-स ष्टिखण्ड, सतीखण्ड, पार्वतीखण्ड, कुमारखण्ड, युद्धखण्ड। शतरुद्रसंहिता में ४२, कौटिरुद्र में ४३, उमासंहिता में ५१, कैलासंहिता में २३ तथा वायवीसंहिता में ७६ अध्याय हैं। शिवपुराण के श्लोकों की संख्या २४ हजार है। इसके उत्तरखण्ड में इस प्रकार का कथन है कि जिसके पूर्व एवं उत्तर खण्ड में शिव का चरित विस्तार के साथ वर्णित है, उसे शिवपुराण कहते हैं। शिवपुराण का एक लक्षश्लोकात्मक रूप भी है, जिसमें बारह संहिताएं हैं, पर सम्प्रति यह ग्रन्थ अनुपलब्ध है। शिवपुराण की वायुसंहिता में ही इस तथ्य का निर्देश है। इसकी संहिताओं के नाम और श्लोक इस प्रकार हैं-

विद्येश्वरसंहिता-१०००००, रौद्रसंहिता-८०००, विनायकसंहिता-८०००, मात संहिता-८०००, रुद्रैकादशसंहिता-१३०००, कैलाससंहिता- ६०००, शतरुद्रसंहिता-१००००, कोटि रुद्रसंहिता-१००००, सहस्त्रकोटि रुद्रसंहिता-४०००। कुल योग १००००००।

कहा जाता है कि इस लक्षश्लोकात्मक शिवपुराण की रचना साक्षात् शंकर ने की थी, जिसका व्यास ने २४ सहस्त्र श्लोकों में संक्षिप्तीकरण किया। 'शिवपुराण' का उल्लेख अलबेरुनी के ग्रन्थ में मिलता है। उसने पुराणों की दो सूचियां दी हैं, जिनमें एक में शिवपुराण का नाम है तथा दूसरी में वायुपुराण का। इससे विदित होता है कि शिवपुराण की रचना १०३० ई० के पूर्व हो चुकी थी। इसकी कैलास संहिता के १६ व १७वें अध्यायों में प्रत्यभिज्ञादर्शन के सिद्धान्तों का विवेचन है, जिसमें शिवसूत्र के दो सूत्रों का स्पष्ट निर्देश है।

चैतन्यमात्मेति मुने शिवसूत्रं प्रवर्तितम्।। ४४।।

चैतन्यमिति विश्वरूप सर्वज्ञानक्रियात्मकम्।

स्वातन्त्र्यं तत्स्वभावी यः स आत्मा परिकीर्तितः।। ४५।।

इत्यादि इतींद तु द्वितीयं सूत्रमीशितु।। ४६।।

इसमें शिवसूत्र के वार्त्तिकों का भी स्पष्ट उल्लेख किया गया है। शिवसूत्र के रचयिता वसुगुप्त हैं, जिनका समय ८५० ई० है, अतः 'शिवपुराण' का समय दशम शती सर्वथा उपयुक्त है। इस प्रकार यह वायुपुराण से अर्वाचीन सिद्ध होता है। शिवपुराण में तांत्रिक पद्धति का बहुशः वर्णन प्राप्त होता है, अतः इसे तांत्रिकता से युक्त उपपुराण मानना चाहिये। यह शिव-विषयक विशाल पुराण है। इसमें शिव सें सम्बद्ध अनेक कथाओं, चरित्रों, पूजा-पद्धतियों तथा दीक्षा-अनुष्ठानों का विस्तारपूर्वक वर्णन है। इसकी रुद्र-संहिता में दक्षप्रजापति की पुत्री सती का चरित्र ४३ अध्यायों में विस्तार के साथ दिया हुआ है, जिसमें सती सीता का रूप धारण कर रामचन्द्र की परीक्षा लेती हैं। इसी प्रकार पार्वती खण्ड में पार्वती के जन्म, तपश्चरण एवं शिव के साथ उनके विवाह का विस्त त वर्णन उपलब्ध होता है। वायवीय संहिता में शैवदर्शन के सिद्धान्तों का भी प्रतिपादन है, जिस पर तांत्रिकता का पूर्ण प्रभाव द ष्टिगोचर होता है। इसमें शैवतन्त्र से सम्बद्ध उपासना-पद्धति का भी विवरण है। शिवपुराण का यह विषय वायुपुराण से नितान्त भिन्न है। इसमें पुराणप चलक्षणम् की पूर्ण व्याप्ति नहीं होती और सर्ग, प्रतिसर्ग तथा मन्वन्तरादि के विवरण प्राप्त नहीं होते। यत्र-तत्र केवल सर्ग के ही विवरण मिलते हैं। 'महाभारत' में वायुप्रोक्त तथा ऋषियों द्वारा प्रशंसित एक पुराण का उल्लेख है, जिसमें अतीतानागत से सम्बद्ध चरितों के वर्णन की बात कही गयी है। उपलब्ध वायुपुराण में इस श्लोक के विषय की संगति सिद्ध हो जाती है। अतः, 'वायुपुराण' निश्चित रूप से 'शिवपुराण' से प्राचीनतर सिद्ध हो जाता है। 'शिवपुराण' में राजाओं की वंशावली नहीं है। इसके मुख्य विषय इस प्रकार हैं-शिवपूजाविधि ा, तारकोपाख्यान, शिव की तपस्या तथा मदन-दहन, पार्वती का जन्म, तपस्या, उनकी तपस्या को देखकर देवताओं का शिव के पास जाना, ब्रह्मचारी के वेश में शिव का पार्वती के पास जाना, शिव-पार्वती -संवाद, शिव के विवाह का उद्योग तथा विवाह, कार्त्तिकेय का जन्म, उनका देवताओं का सेनापतित्व ग्रहण तथा तारकासुर का वध, विष्णु के उपदेश से देवगणों का कोटि शिव मन्त्र का जप, लिंगार्चन तथा उसका माहात्म्य, षोडशोपचार, गणेशचरित्र, गणेश का विवाह एवं उसे श्रवण कर कार्त्तिकेय का क्रोधित होकर क्रौंचपर्वत पर जाना, रुद्राक्षधारण-माहात्म्य-कथन, नन्दिकेशतीर्थ-माहात्म्य-कथन, रावण की तपस्या का माहात्म्य, वैद्यनाथ की उत्पत्ति, रामेश्वर का माहात्म्य, नागेश-माहात्म्य वाराह रूप से हिरण्याक्ष का वध, नलदमयन्तीकथा, व्यास के उपदेश से अर्जुन का इन्द्रकोल पर्वत पर जाना, तपस्या तथा इन्द्र का समागम, भिल्लरूपधारी शिव का आना तथा अर्जुन के साथ उनका युद्ध, अर्जुन की वरदान प्राप्ति, पार्थिवपूजाविधि, बिल्वेश्वरमाहात्म्य, विष्णु द्वारा सहस्त्रकमल से शिव की पूजा, शिव की कृपा से विष्णु को

सुदर्शनचक्र की प्राप्ति, शिवसहस्त्रनाम का वर्णन, शिवरात्रि व्रत की महिमा, चतुर्विध मुक्ति का वर्णन, शिव द्वारा विष्णुप्रभ ति देवताओं की उत्पत्ति का वर्णन, एकमात्र भक्ति-साधन से ही शिव-भक्ति-लाभ, लिंग-प्रतिष्ठा, लिंगनिर्माण, ब्रह्मा-विष्णु द्वारा शिव की पूजा, लिंग-पूजा का नियम, शिव-तीर्थ-सेवामाहात्म्य, पंचमहायज्ञ कथन, पार्थिव प्रतिमाविधि, प्रणव माहात्म्य, शिवभक्ति-पूजा कथन षड्लिंग-माहात्म्य, बन्धन-मुक्ति-स्वरूप-कथन, लिंगक्रमकथन, रुद्रस्तव, शिवसर्वज्ञादिकथन, रुद्रलोक, ब्रह्मलोक तथा विष्णुलोक का विवरण।

उपपुराण

पुराणों की भांति उपपुराणों की भी गणना की गयी है। विद्वानों का विचार है कि पुराणों के बाद ही उपपुराणों की रचना हुई है, पर प्राचीनता अथवा मौलिकता के विचार से उपपुराणों की महत्ता पुराणों के समान है। उपपुराणों में स्थानीय सम्प्रदाय तथा प थक् प थक् सम्प्रदायों की धार्मिक आवश्यकता पर अधिक बल दिया गया है। उपपुराणों की सूची इस प्रकार है-

सनत्कुमार, नरसिंह, नान्दी, शिवधर्म, दुर्वासा, नारदीय, कपिल, मानव, उषनस्, ब्रह्माण्ड, वारुण, कालिका, वसिष्ठ, लिङ्ग, महेश्वर, साम्ब, सौर, पराशर, भार्गव, मारीच उपपुराण। एक नीलमत उपपुराण भी मिलता है। इनके अतिरिक्त कुछ अन्य उपपुराण भी हैं-आदित्य, मुद्गल, कल्कि, देवीभागवत, व हद्धर्म, परानन्द, पशुपति, हरिवंश तथा विष्णुधर्मोत्तर।

प्रमुख उपपुराणों का परिचय

हरिवंश पुराण

'हरिवंश' को महाभारत का खिल भाग माना जाता रहा है; किन्तु इसमें पुराणों के सभी लक्षण विद्यमान हैं, अतः इसका विकास एक स्वतन्त्र पुराण के रूप में हुआ है। यह खेद की बात है कि विद्वानों ने महापुराण के रूप में इस पर कम ध्यान दिया है, फलतः यह उपेक्षा का पात्र बना हुआ है। इसका कारण यह है कि महापुराणों की सूची में जिन १८ पुराणों को स्थान दिया गया है, उनमें हरिवंश नहीं है। पर फरक्युहर तथा विण्टरनित्स प्रभ ति विद्वानों ने इसमें पौराणिक तत्त्वों का पर्यवेक्षण कर इसे महापुराणों में स्थान दिया है और संख्या-क्रम से इसे २०वाँ पुराण कहा है। अधिकांश विद्वान् इसे उपपुराण ही स्वीकार करते हैं।

'हरिवंश' साहित्यिक तथा सांस्कृतिक द ष्टि से अत्यन्त महनीय कृति है। इसमें पुराण के पंच लक्षण सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश मन्वन्तर तथा वंशानुचरित का विस्त त विवेचन है। 'हरिवंश' तीन बड़े पर्वों में विभाजित है; इसकी श्लोक संख्या १६३७४ है। प्रथम पर्व का नाम 'हरिवंश पर्व' है, जिसमें ५५ अध्याय हैं। इसके द्वितीय पर्व को 'विष्णुपर्व' कहते हैं, इसमें ८१ अध्याय हैं। 'त तीयपर्व' का नाम 'भविष्य पर्व' है, जिसमें १३५ अध्याय हैं। हरिवंश में विस्तारपूर्वक विष्णु भगवान का चरित वर्णित है तथा कृष्ण की कथा एवं ब्रज में की गयी उनकी विविध लीलाओं का मोहक वर्णन है। इसमें पुराणपंचलक्षण का पूर्णतः विनियोग हुआ है तथा ग्रन्थ का आरम्भ स ष्टि की उत्पत्ति से किया गया है। इसमें प्रलय का भी वर्णन है तथा वंश और मन्वतरों के अनुरूप राजाओं तथा ऋषियों के विविध आख्यान वर्णित हैं। इसमें पुराणों में वर्णित अनेक साम्प्रदायिक प्रसंग भी मिलते हैं।; जैसे वैष्णव, शैव एवं शाक्त विचारधारायें। 'हरिवंश' में योग तथा सांख्य-सम्बन्धी विचार हैं तथा अनेक दार्शनिक तत्त्वों का भी विवेचन प्राप्त होता है। इसके प्रथम पर्व में ध्रुव, दक्ष तथा उनकी पुत्रियों की कथा, वेद और यज्ञविरोधी राजा वेन की कथा, उनके पुत्र तथा प थु, विश्वामित्र एवं वशिष्ठ के आख्यान वर्णित हैं। अन्य विषयों के अन्तर्गत राजा इक्ष्वाकु एवं उनके वंशधरों तथा चन्द्रवंश का वर्णन है।

द्वितीयपर्व में (विष्णु) मानव रूपधारी विष्णु अर्थात् कृष्ण की कथा अत्यन्त विस्तार के साथ कही